सीआरपीएफ समाचार

राजभाषा विशेषांक

वर्ष 62 | अंक 6 | जुलाई - अगस्त, 2016



वीरता पदक से अलंकृत हमारे शूरवीर



श्री हंसराज गंगाराम अहीर, गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार ''नमन'' पुस्तक का विमोचन करते हुए साथ में श्री के. दुर्गा प्रसाद, महानिदेशक एवं श्री सुधीर प्रताप सिंह, अपर महानिदेशक (प्रशिक्षण)।



श्री के. दुर्गा प्रसाद, महानिदेशक द्वारा 77वीं वर्षगांठ के अवसर पर प्रेस कॉन्फ्रेंस को सम्बोधन।

मुख्य संरक्षकः
श्री के. दुर्गा प्रसाद, महानिदेशक

संपादकीय सलाहकार मण्डल

अध्यक्षः
श्री आर. पी. सिंह, अपर महानिदेशक (मुख्यालय)

सदस्यः श्री आर. के. मिश्रा, महानिरीक्षक (कार्मिक), श्री जुल्फिकार हसन, महानिरीक्षक (परिचालन), श्री एम.पी.एस. नेगी, निदेशक, सीआरपीएफ अकादमी, श्रीमती अनुपम कुलश्रेष्ठ, महानिरीक्षक (संभरण), श्रीमती ऐनी एब्राहम, उप महानिरीक्षक (आसूचना), ब्रिगेडियर एस.के. शर्मा, उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण), श्रीमती रेखा लोहानी, उप महानिरीक्षक (प्रशासन)

सीआरपीएफ समाचार एक द्विमासिक पत्रिका है। इसमें प्रकाशित किये जाने वाले विचार लेखकों के व्यक्तिगत विचार हैं। विभाग की नीति से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है।

— मुख्य संपादक

मुख्य संपादक : भुवन चन्द्र खंडूरी (ज.सं.अ.)

संपादक : सत्येन्द्र सिंह (निरीक्षक / हि.अनु.)

चित्र :
जनसंपर्क फोटो सेल, महानिदेशालय और सीआरपीएफ यूनिट्स

संपादकीय कार्यालय :
महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, ब्लाक–1, केन्द्रीय कार्यालय परिसर, लोधी रोड, नई दिल्ली–110003, दूरभाषः 24360649

महानिदेशक सीआरपीएफ की ओर से मुद्रित और प्रकाशितः
मित्तल एण्टरप्राइजेज, 2076, गोकुलशाह गली, सीताराम बाजार, दिल्ली–06

इस अंक में

		पृष्ठ संख्या
1.	महानिदेशक का राजभाषा संदेश	02
2.	78वां स्थापना दिवस समारोह	04
3.	के0रि0पु0 बल को वीरता के लिए पुनः 44 पदक	15
4.	दिव्यांग साईकिल चालक दल महानिदेशक द्वारा सम्मानित	18
5.	शहीद कमाण्डेन्ट श्री प्रमोद कुमार को नमन	19
6.	शहीदों को शत् शत् नमन	20
7.	के0रि0पु0 बल ने किया कौशल विकास मंत्रालय के साथ समझौता पर हस्ताक्षर	22
8.	सहायक निदेशक (राजभाषा) की कलम से	23
9.	हिन्दी साहित्य का इतिहास	24
10.	अनुवाद में सृजनशीलता	27
11.	हिन्दी महाकुंभ में छलका उम्मीदों का अमृत	28
12.	नक्सलवाद	29
13.	अपनी हिन्दी	30
14.	अध्ययन यात्रा	31
15.	सीआरपीएफ अकादमी	33
16.	स्वच्छ भारत अभियान	33
17.	राजभाषा पुरस्कार	34
18.	महानिदेशक के दौरे	35
19.	महानिदेशालय के कार्यक्रम	37
20.	रोहिणी स्कूल के छात्र पुरस्कृत	39
21.	उपलब्धियाँ	40
22.	अधिकारियों का विवरण	41
23.	विशिष्ट एवं सराहनीय सेवा पदक	42
24.	महानिदेशक का डिस्क एवं प्रशंसा पत्र	44

"महानिदेशक का राजभाषा संदेश"
14 सितंबर 2016



हमारा देश विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। यहाँ जनता की सरकार, जनता द्वारा और जनता के लिए चुनी जाती है। सरकार के प्रशासन की भाषा वही होनी चाहिए जिसे देश की अधिकांश जनसंख्या भली–भांति समझती हो, जिससे प्रशासन एवं जनता के बीच कोई दूरी न रहे तथा सरकार की नीतियों एवं योजनाओं को जनता भली–भांति समझते हुए अपनी भागीदारी एवं योगदान सुनिश्चित कर सके। इसी भावना को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने संविधान सभा की बैठक में आज ही के दिन 14 सितंबर 1949 को संघ सरकार के कार्यालयों में कामकाज की भाषा के रूप में देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को अपनाने का निर्णय लिया।

एक उदाहरण के रूप में हम यह समझ सकते हैं कि आचार्य विनोबा भावे ने भूदान आंदोलन की अपार सफलता के बाद यह कहा था कि यदि वे मराठी भाषा को लेकर चलते तो यह आंदोलन केवल महाराष्ट्र तक सीमित होता, यदि गुजराती को लेकर चलते तो यह आंदोलन केवल गुजरात तक सीमित होता, यदि अंग्रेजी को लेकर चलते तो कुछ गिने–चुने लोग ही इसको समझ पाते, इसलिए हिंदीत्तर भाषी होते हुए भी उन्होंने हिंदी को अपनाया और हिंदी में ही अपना संदेश पूरे देशवासियों को दिया जिसका परिणाम यह हुआ कि पूरे देश में भूदान आंदोलन इतनी सफलता प्राप्त कर सका।

आज के परिप्रेक्ष्य में सूचना प्रौद्योगिकी ने हिंदी और अंग्रेजी की दूरी को मिटा दिया है। कंप्यूटर के काम करने के लिए जो सुविधा अंग्रेजी के साथ है, वही सुविधा अब विभिन्न सॉफ्टवेयरों एवं यूनिकोड के माध्यम से हिंदी में भी प्राप्त हो गई है। जहाँ तक केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल का सवाल है, हमारे यहाँ सेलो सॉफ्टवेयर मौजूद है जिसमें हम हिंदी और अंग्रेजी दोनों में ही समान रूप से पत्र या बेतार भेज सकते हैं और प्राप्त कर सकते हैं।

हमारा बल एक लघु भारत का स्वरूप है, जिसमें भारत के सभी कोनों के रहने वाले अपना योगदान दे रहे हैं। परंतु यहाँ विशेष रूप से यह उल्लेखनीय है कि खान–पान, रहन–सहन, रीति–रिवाज एवं बोलचाल की भाषा में विभिन्नता होते हुए भी हम सभी एक ही मंच पर समान रूप से पूरा समन्वय बनाते हुए अपने कार्य को निष्पादित कर रहे हैं, तो इसका एक ही कारण है, हिंदी भाषा का प्रयोग। क्योंकि यह भाषा हम सभी को आपस में जोड़ती है। हमारे जवानों एवं अधिकारियों के बीच में आपसी संवाद, विचार–विमर्श को प्रभावी रूप से बनाए रखती है तथा हमें काम में कहीं कोई असुविधा नहीं होती है, तो ऐसे में हमारे कार्यालयों में काम करने वाले अधिकारियों एवं कार्मिकों का दायित्व और बढ़ जाता है कि वे संविधान सभा की भावना, संविधान में दिए गए निर्देशों तथा बल में इसकी महती आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में ही करें।

इसका एक मुख्य उद्देश्य यह भी है कि हमारे बल के अधिकतर जवानों को या तो हिंदी का ज्ञान है या उनकी अपनी मातृभाषा का। बहुत ही कम ऐसे जवान होंगे जिन्हें अंग्रेजी पढ़ना और लिखना बहुत अच्छा आता हो, ऐसे में हम सभी का यह कर्त्तव्य और बड़ी जिम्मेदारी है कि जवानों से संबंधित जो भी कार्यालयी कार्य हम कर रहे हैं, जिसमें उनकी सेवा से संबंधित लाभ, उनके वेतन एवं भत्तों से संबंधित पत्राचार,

उनके कल्याण से संबंधित कार्य, ऐसे सभी कार्यालयी कार्यों को हिंदी में ही करें ताकि जिसके लिए यह कार्य किया जा रहा है और जिन पर यह लागू होगा, वे इसको भली–भांति समझ सकें तथा हमारा कार्य सार्थक सिद्ध हो सके।

मैं आपसे यह भी कहना चाहता हूँ कि प्रशासनिक कार्यों के लिए विभिन्न प्रकार के मैनुअल, नियम, अधिनियम इत्यादि बनाए गए हैं और यदि आप उनका उल्लंघन करते हैं तो आपके मन में यह डर होता है कि उनके उल्लंघन पर आपको प्रतिकूल टिप्पणी मिल सकती है। लेकिन अक्सर ऐसा देखा जाता है कि राजभाषा हिंदी से संबंधित भारत सरकार के जो नियम, अधिनियम बनाए गए हैं तथा संविधान में जो निर्देश दिए गए हैं या भारत सरकार द्वारा समय–समय पर जो आदेश जारी किए गए हैं, उनके अनुपालन में अनदेखी की जाती है, जिसे किसी भी प्रकार से उचित नहीं ठहराया जा सकता है। इसलिए मैं, आप सभी को बताना चाहता हूँ कि जैसे आप दूसरे नियम, अधिनियम, आदेशों का पालन करते हैं, उसी प्रकार राजभाषा से संबंधित नियम, अधिनियम एवं आदेशों का पालन भी पूरी निष्ठा के साथ करें तथा शासन एवं जनता के बीच संवाद में अपना सार्थक योगदान दें।

अब मैं, आप सभी का ध्यान भारत सरकार के राजभाषा नियमों के कार्यान्वयन के एक मुख्य बिन्दु की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ कि हमारे अधिकतर अधिकारीगण यह समझते हैं कि राजभाषा नियम, अधिनियम एवं अनुदेशों के अनुपालन का दायित्व मात्र हिंदी पदों से जुड़े लोगों का ही है, जबकि भारत सरकार का यह निर्देश है कि किसी भी कार्यालय में राजभाषा नीति के अनुपालन का उत्तरदायित्व उस कार्यालय के कार्यालय प्रमुख का है तथा हिंदी से जुड़े कर्मचारी या अधिकारी इस कार्य में अपने कार्यालय प्रमुख की सहायता करते हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए मैं, सभी कार्यालय प्रमुखों से यह अपेक्षा करता हूँ कि वे राजभाषा से संबंधित अपने उत्तरदायित्व को समझें तथा अपने कार्यालय में इन नीतियों का पूर्णतया अनुपालन सुनिश्चित करवाएँ।

यहाँ यह भी आप सभी के ध्यान में लाना आवश्यक है कि राजभाषा नियम, अधिनियम, आदेशों एवं नीतियों के अनुपालन की जांच हेतु महानिदेशालय, केरिपुबल, गृह मंत्रालय एवं उच्चाधिकार प्राप्त संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण किया जाता है। ऐसे में यदि आपके कार्यालय में राजभाषा नीतियों के अनुपालन में शिथिलता पाई जाती है तो संसदीय राजभाषा समिति द्वारा उसे गंभीरता से लिया जाता है।

अतः आज के दिन आप सभी यह शपथ लें कि हम अपने व्यक्तिगत जीवन में किसी भी रीति–रिवाज, रहन–सहन एवं भाषा को अपनाते हों, परंतु कार्यालय में हम सभी हिंदी को ही अपनाएँ और अपना अधिकतर कार्य हिंदी में ही करने का भरसक प्रयास करते हुए संविधान की भावना के अनुरूप प्रशासन एवं आम जनता के बीच होने वाले संवाद में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में अपना सक्रिय योगदान देकर अपने राष्ट्र को और सशक्त एवं उन्नत बनाएं।

जय हिंद, जय हिंदी।

शुभकामनाओं सहित,

आपका

के. दुर्गा प्रसाद

(के. दुर्गा प्रसाद) भा.पु.से.

महानिदेशक

78 वां स्थापना दिवस समारोह



परेड में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली महिला दल



केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने दिनांक 27/07/2016 को अपनी 77वीं वर्षगांठ ग्रुप केंद्र, केरिपुबल, कादरपुर, गुड़गांव में मनाई। इस समारोह के मुख्य अतिथि श्री हंसराज गंगाराम अहीर, माननीय गृह राज्य मंत्री ने परेड की सलामी ली। इस शानदार परेड की अगुवाई श्री सूरज पाल वर्मा, कमांडेंट द्वारा की गई, जिसमें सी0आर0पी0एफ0 बैंड की मधुर धुनों पर मार्च–पास्ट किया। इस परेड का मुख्य आकर्षण महिलाओं द्वारा क्विक ड्रिल/यू0ए0सी0 का प्रदर्शन, मार्शल आर्ट वुशू और डॉग–शो था। बेल्जियन शैफर्ड मैलिनॉइस डॉग द्वारा विपरीत परिस्थितियों में आक्रमण करने का अनोखा प्रदर्शन किया गया।

इस अवसर पर श्री हंसराज गंगाराम अहीर द्वारा केरिपुबल के दो जवानों को वीरता के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक प्रदान करके सम्मानित किया गया एवं 08 अन्य अधिकारियों और जवानों को भी उत्कृष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक से अंलकृत किया गया।



एल0डब्ल्यू0ई0 थियेटर में 215 बटालियन, जम्मू–कश्मीर थियेटर में 110 बटालियन और पूर्वोत्तर थियेटर में 147 बटालियन को सर्वोत्तम परिचालन बटालियन की ट्रॉफी प्रदान की गई। 205 बटालियन को सर्वोत्तम कोबरा बटालियन घोषित किया गया। ग्रुप केंद्र, केरिपुबल, पुणे को सर्वोत्तम ग्रुप केंद्र की ट्राफी से सम्मानित किया गया, जबकि आर0टी0सी0 नीमच को सर्वोत्तम प्रशिक्षण संस्थान घोषित किया गया। माननीय गृह राज्य मंत्री द्वारा शहीदों पर 04 खण्डों के संग्रह 'नमन' का भी विमोचन किया गया।

श्री के0 दुर्गा प्रसाद ने मुख्य अतिथि को स्मृति चिन्ह भी भेंट किया। श्री सुधीर प्रताप सिंह, अपर महानिदेशक (प्रशिक्षण) नें धन्यवाद प्रस्ताव दिया। इससे पूर्व माननीय गृह राज्य मंत्री ने ''शहीद स्मारक'' पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

****



महानिदेशक का भाषण



आदरणीय श्री हंसराज गंगाराम अहीर, गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार, अन्य अर्द्ध सैनिक बलों के प्रमुख, सम्मानीय अतिथिगण, मीडिया के प्रतिनिधि, देवियों, सज्जनों, प्यारे बच्चों और मेरे प्रिय साथियों ।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 78वें स्थापना दिवस के अवसर पर के॰रि॰पु॰बल अकादमी, कादरपुर में आयोजित परेड में, मैं आप सभी का हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन करता हूँ। आज के दिन सन् 1939 में नीमच में के॰रि॰पु॰बल की स्थापना हुई थी। एक बटालियन की नफरी से शुरू होकर आज यह बल 3,14,138 की नफरी के साथ विश्व के सबसे बड़े सशस्त्र पुलिस बल के रूप में देश व विदेशों में अपने कारनामों को अंजाम दे रहा है। इस बल की उपलब्धियों एवं इतिहास पर हम अपने आपको अत्यन्त गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं।

माननीय गृह राज्य मंत्री जी ने अपने व्यस्त कार्यक्रमों के बावजूद आज के इस शुभ अवसर पर उपस्थित होकर हमें अनुग्रहीत किया है, जो के॰रि॰पु॰बल के प्रति महोदय के विशेष लगाव का परिचायक है। मैं के॰रि॰पु॰बल की ओर से तहे दिल से महोदय का आभार प्रकट करता हूँ।

के॰रि॰पु॰बल आंतरिक सुरक्षा एवं कानून–व्यवस्था कायम रखने वाला देश का अहम् स्तम्भ है। मैं बल के सभी वीर शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए उनके बलिदान को सच्चे दिल से नमन करता हूँ।

इस बल ने न सिर्फ देश के अन्दर बल्कि देश की सरहदों एवं विदेशों में भी कठिन परिस्थितियों में सेवाएं दी हैं। चाहे हॉट स्प्रींग हो या कच्छ के रण में स्थित सरदार पोस्ट, संसद भवन हो या अयोध्या स्थित राम जन्म भूमि के॰रि॰पु॰बल के बहादुर जवानों ने हर जगह, हर समय देश के दुश्मनों को माकूल जवाब देते हुए देश की रक्षा की है और जरूरत पड़ने पर अपने प्राणों की आहुति दी है। अब तक के॰रि॰पु॰बल के 2041 बहादुर जवानों ने देश के लिए अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया है। इसी का परिणाम है कि देश के सभी प्रान्तों की सरकारें चाहे कानून एवं व्यवस्था की स्थितियों से निपटना हो, चाहे उग्रवादी एवं नक्सलवादी हिंसा से निपटना हो या प्राकृतिक आपदा हो, सबसे पहले के॰रि॰पु॰बल की मांग करती हैं। यह हमारे लिए एक गौरव की बात है।

वीरता और कर्तव्य परायणता के॰रि॰पु॰बल की परम्परा रही है। के॰रि॰पु॰बल के बहादुर जवानों ने अब तक 01 जॉर्ज क्रॉस, 03–किंग पीएमजी, 01 अशोक चक्र, 01 कीर्ति चक्र, 01 वीर चक्र, 14 शौर्य चक्र, 01 पद्म श्री, 16 अर्जुन अवार्ड, 01 राजीव गांधी खेल रत्न अवार्ड, 49 पीपीएफ एसएमजी, 192 पीपीएमजी, 1169 पीएमजी, 05 आईपीएमजी, 04 विशिष्ट सेवा मेडल, 01 युद्ध सेवा मेडल, 05 सेना मेडल, 100 प्रधानमंत्री के जीवन रक्षक मेडल और 03 जीवन रक्षा कुल 1570 पदक अर्जित किए हैं।

इस बल ने वर्ष 2015 में गणतंत्र दिवस तथा स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर कुल 101 वीरता के पदक हासिल किये जो कि किसी भी बल के इतिहास में सबसे बड़ी उपलब्धि है।

बल की बटालियनों के लिए बेहतर कैंपिंग साइट उपलब्ध कराने के अलावा बल के कार्मिकों के लिए आवास की सुविधा में और बढ़ोत्तरी करने के लिए प्रयास किये जा रहे हैं। इन्हीं प्रयासों के परिणामस्वरूप के॰रि॰पु॰बल को 10331 पारिवारिक आवासों तथा 55 बैरकों के निर्माण की स्वीकृति प्रदान की गई है।

महोदय, केरिपुबल के जवान अपने परिवार से लम्बे समय तक दूर रहकर अति कठिन परिस्थितियों में देशद्रोही तत्वों के खिलाफ जान की बाजी लगाकर कार्यवाही कर रहे हैं। मैं बल की तरफ से आश्वासन दिलाना चाहता हूँ कि हम देश सेवा में तन मन से समर्पित रहेंगे और अपनी जिम्मेदारियों को पूर्ण निष्ठा के साथ निभाएंगे तथा देश की एकता एवं अखण्डता पर कोई आँच नहीं आने देंगे।

मैं पुनः आदरणीय श्री हंसराज गंगाराम अहीर, गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार का धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने अपने व्यस्ततम समय से समय निकालकर अपनी उपस्थिति से इस समारोह की शोभा बढाई।

धन्यवाद, जय हिन्द।

माननीय गृह राज्य मंत्री का संबोधन

श्री के. दुर्गा प्रसाद, महानिदेशक, केरिपुबल, अन्य बलों के प्रमुख, विशिष्ट अतिथिगण, बल के बहादुर अधिकारी, जवान, मीडिया बंधु, देवियों और सज्जनों।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 78वें स्थापना दिवस के अवसर पर मैं इस बल के सभी अधिकारियों और जवानों को अपनी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ। मैं, इस महान बल के उन बहादुर शहीदों को उनके सर्वोच्च बलिदान के लिए अपने हृदय से नमन और श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ जिन्होंने इस बल की आन, बान और शान की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी है। मैं उन सभी वीर अधिकारियों और जवानों को भी बधाई देता हूँ जिन्हें शौर्य और उत्कृष्ट सेवाओं के लिए पदकों से अलंकृत किया गया है।

केवल 2 बटालियनों से प्रारंभित के.रि.पु.बल वर्तमान समय में 239 बटालियनों की नफरी के साथ देश का सबसे बड़ा अर्द्ध सैनिक बल है। यह बल देश में सौंपे गए विभिन्न दायित्वों जैसे कि शांति, साम्प्रदायिक सौहार्द, विशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा, विद्रोहरोधी कार्रवाई, नक्सली आतंक पर नियंत्रण, आपदा प्रबंधन आदि का सफलतापूर्वक निर्वहन कर रहा है। इसके साथ ही संयुक्त राष्ट्र के अधीन कोसोवो, लाइबेरिया, श्रीलंका आदि राष्ट्रों में शांति कायम करने के पावन कार्यों में अपनी सेवाएं देता रहा है। केरिपुबल का उद्देश्य सेवा और निष्ठा है।

यह केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ही था जिसने 21 अक्टूबर, 1959 को हॉट स्प्रिंग्र (लेह–लद्दाख) में बहुत बड़ी संख्या में स्वचालित हथियारों से चीनी सैनिकों द्वारा किए गए हमले का पहला दंश झेला था। इस हमले में केरिपुबल के 10 वीर जवानों ने देश के लिए अपने प्राण न्यौछावर किए। इसलिए हॉट स्प्रिंग स्थान पुलिस बलों के लिए आज एक तीर्थ स्थान माना जाता है और उनकी शहादत की स्मृति में देशभर में प्रति वर्ष 21 अक्टूबर को ''पुलिस स्मृति दिवस'' के रूप में मनाया जाता है।



दिनांक 8–9 अप्रैल की मध्य रात्रि में सरदार पोस्ट पर पाकिस्तानी सेना की 51वीं इन्फ्रैन्ट्री ब्रिगेड के 3500 जवानों ने हमारी सीमा चौकी पर गुप्त रूप से ''डेजर्ट हॉक'' आपरेशन चलाया। कल्पना कीजिए 3500 जवानों व टैंकों तथा स्वचालित हथियारों से युक्त एक ब्रिगेड और हमारी 2 कम्पनियों की छोटी सी टुकड़ी। फिर भी हमारे वीर जवानों ने अत्यंत पराक्रम व बहादुरी के साथ पाकिस्तानी ब्रिगेड का मुकाबला करते हुए मातृभूमि की रक्षा की और बल के गौरव में एक नई गाथा को स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज कराया। इस मुकाबले में हमारे रणबांकुरों ने 34 पाकिस्तानी सैनिकों को मार गिराया और 4 सैनिकों को बंदी बनाया। हालांकि इस मुकाबलें में हमारे 6 वीर जवान भी शहीद हुए। इस युद्ध ने इस बल को गौरवान्वित किया।

13 दिसम्बर, 2001 को प्रजातंत्र के सर्वोच्च मंदिर संसद भवन पर पाकिस्तानी आतंकवादियों ने हमला किया। केरिपुबल और आतंकवादियों के बीच लगभग 30 मिनट तक भीषण मुकाबला हुआ और हमारे वीर जवानों ने पांचों आतंकवादियों को मार गिराया।

दिनांक 5 जुलाई, 2005 को 5 सशस्त्र आतंकवादियों ने अयोध्या में राम जन्म भूमि/बाबरी मस्जिद परिसर को तबाह करने का प्रयास किया। आतंकवादियों के नापाक इरादों को नाकाम करते हुए सभी को घटनास्थल पर ही मार गिराया गया। बल की इस वीरतापूर्ण कार्रवाई से न केवल दुश्मनों को मुंहतोड़ जबाव मिला, बल्कि देश का साम्प्रदायिक सद्भाव बनाये रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इस बल के वीरतापूर्ण दृष्टांतों से बल के जवान न केवल प्रेरित होते हैं, बल्कि इस बल का सदस्य होने में गौरव की अनुभूति भी करते हैं।

केरिपुबल अपने आप में एक अनूठा बल है जो सदैव हर परिस्थिति का सामना करने के लिए तैयार रहता है। चाहे पंजाब या जम्मू कश्मीर में

आतंकवाद एवं अलगाववाद की समस्या से जूझना हो, पूर्वोत्तर राज्यों में विद्रोही समस्या से निपटना हो, मध्य भारत में नक्सलवाद से प्रभावित राज्यों में नक्सलवाद की समस्या से लोहा लेना हो, केरिपुबल का नाम सबसे पहले आता है। जम्मू कश्मीर में आई भीषण बाढ़ के दौरान केरिपुबल द्वारा युद्ध स्तर पर बचाव व राहत कार्य चला कर हजारों लोगों के जानमाल की रक्षा की। समय–समय पर हुए लोकसभा के आम चुनावों, विभिन्न राज्यों के विधानसभा चुनावों, नगर निगमों एवं पंचायतों के चुनाव शांतिपूर्ण ढंग से पूर्ण कराने में भी केरिपुबल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

पिछले एक वर्ष के दौरान केरिपुबल ने जम्मू कश्मीर, पूर्वोत्तर राज्यों और वामपंथी उग्रवाद से प्रभावित क्षेत्रों में शानदार परिचालनिक उपलब्धियां हासिल की हैं। बल द्वारा पिछले वर्ष चलाये गये 316 अन्तर्राज्यीय, 983 अन्तर बटालियन तथा 1633 अन्तर कम्पनी कुल 2932 विभिन्न परिचालनिक अभियानों में कुल 114 खूंखार आतंकवादियों/विद्रोहियों को मार गिराया और 1813 को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की गयी। आप लोगों की साहसपूर्ण कार्रवाईयों के दवाब में 940 उग्रवादियों द्वारा आत्मसमर्पण किया गया है। इन परिचालनिक अभियानों के दौरान विभिन्न प्रकार के 672 हथियार और अन्य विस्फोटक सामग्री जिनमें 12,651 राउण्ड, 1302.271 किलोग्राम विस्फोटक, 1592 आइ0ई0डी0, 12665 डेटोनेटर तथा 5669 जिलेटिन छडें. शामिल हैं, बरामद की गयीं।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि आज हमारे सामने बढ़ते हुए नक्सलवाद का मुकाबला करना सबसे बड़ी चुनौती है। केरिपुबल पहले से इस चुनौती का सामना कर रहा है। माओवादियों ने ना केवल सुरक्षा बलों पर, बल्कि स्कूल भवनों, पुलों, सड़कों, विद्युत लाईनों और टेलीफोन टावरों, यहां तक की एम्बुलेंस पर हमला करने की रणनीति अपनाई है। आज आम भारतीय नागरिकों और विशेषकर हमारे आदिवासी भाईयों को इन उग्रवादी संगठनों द्वारा किए जा रहे हिंसक कृत्यों की निरर्थकता को समझने और विकास की दिशा में कार्य कर रही सकारात्मक ताकतों के साथ सहयोग करने की आवश्यकता है।

इसमें, अब आपकी सबसे बड़ी परीक्षा यह है कि आप कितने अच्छे तरीके से और सफलतापर्वूक सुदूरवर्ती आदिवासियों तक पहुंचने में सक्षम हो पाते हैं और उन्हें समझाकर युक्तिपूर्ण रीति से बाहर की दुनिया के बारे में बता सकते हैं। परन्तु उस क्षेत्र की आम जनता की सहायता के लिए उच्च दर्जे की संवेदनशीलता, धैर्य और परिपक्वता प्रदर्शित करनी होगी और उनकी मदद के लिए हाथ बढ़ाना होगा।

खेलकूद के क्षेत्र में भी केरिपुबल कार्मिकों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है जिसके लिए बल के कार्मिकों को राजीव गांधी खेल रत्न, अर्जुन और पदमश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह उपलब्धि किसी भी संगठन के लिए अत्यंत गर्व का विषय है। मैं इस संगठन को इन शानदार उपलब्धियों के लिए बधाई देता हूँ।

बल की बटालियनों के लिए बेहतर कैंपिंग साइट उपलब्ध कराने के अलावा कार्मिकों के लिए आवास की सुविधाओं में और बढोतरी करने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। देश में कानून एवं व्यवस्था की गंभीर चुनौतियों के मद्देनजर बल के आधुनिकीकरण संबंधी योजनाओं पर अग्रता से अमल करना सरकार की प्राथमिकताओं में शामिल हैं।

सरकार केरिपुबल के कार्मिकों और उनके कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है। मुझे यह बताया गया है कि केरिपुबल के कार्मिकों के कल्याण से संबंधित कुछ प्रस्ताव गृह मंत्रालय में विचाराधीन हैं। जिनमें मेडिकल तथा इन्जीनियरिंग कालेजों में केन्द्रीय आर्मड पुलिस बलों के आश्रितों के लिए सीटें आरक्षित करना, विशिष्ट तथा सराहनीय सेवाओं के लिए मेडल प्राप्त करने वाले अधिकारियों एवं कार्मिकों के लिए रेल यात्रा किरायों के मौजूदा छूट सीमा 60 फीसदी से 75 फीसदी करना, केन्द्रीय पुलिस बलों के भूतपूर्व कार्मिकों एवं उनके परिवार के सदस्यों को भी भूतपूर्व सैनिकों के समान सुविधा प्रदान करना आदि शामिल हैं। मैं, यह विश्वास दिलाना चाहता हूँ, कि गृह मंत्रालय द्वारा उपरोक्त सभी प्रस्तावों पर प्राथमिकता के साथ विचार करते हुए शीघ्र निर्णय लिया जाएगा।

आज मुझे यहां पर सुसज्जित और भव्य परेड देखने का अवसर मिला। परेड कमान्डर व परेड में शामिल जवानों को भव्य, सुसज्जित और शानदार परेड के लिए बधाई देता हूँ।

मैं, श्री दुर्गा प्रसाद जी का आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने मुझे यहाँ आप लोगों के बीच इस भव्य परेड में शामिल होने का अवसर दिया। अन्त में मैं, एक बार फिर इस बल की 77 वीं वर्षगांठ के पावन अवसर पर आप सभी को बधाई देता हूँ।

जय हिन्द ।

****



परेड की झलकियाँ













पदक वितरण





सिपाही/जीडी श्री पी. वेलू मुरूगन,
105 बटा. पीपीएमजी पदक प्राप्त करते हुए



उ.नि./जीडी बिरेश चौहान, महानिदेशालय
पीपीएमजी पदक प्राप्त करते हुए



उ.नि.(महिला) श्रीमती कल्पना शाहा,
213 बटा. विशिष्ट सेवा पदक प्राप्त करते हुए



उ.नि.(जी.डी) सुब्रामणि थंगामणि,
39 बटा. विशिष्ट सेवा पदक प्राप्त करते हुए



श्री मृत्युंजय हाज़रा, उप.कमा.,
169 बटा. विशिष्ट सेवा पदक प्राप्त करते हुए



श्री इंदर सिंह, भू.पू.कमा.
विशिष्ट सेवा पदक प्राप्त करते हुए



श्री प्रवीन कुमार शर्मा, पु.उ.म.नि., आरएएफ मुख्या.
विशिष्ट सेवा पदक प्राप्त करते हुए



श्री पी.जे. मोहने, भू.पू.महानिरीक्षक
विशिष्ट सेवा पदक प्राप्त करते हुए



श्री शैलेन्द्र कुमार, अपर महानिदेशक, दक्षिणी क्षेत्र,
विशिष्ट सेवा पदक प्राप्त करते हुए

ट्रॉफी वितरण



श्री किशोर कुमार, कमा., 110 बटा. जम्मू व कश्मीर परिचालन का सर्वोत्तम बटालियन ट्रॉफी प्राप्त करते हुए



श्री नरेश कुमार, कमा., 147 बटा., उत्तर पूर्व परिचालन का सर्वोत्तम बटालियन ट्रॉफी प्राप्त करते हुए



श्री अम्बरेश कुमार, कमा., 215 बटा. माओवाद प्रभावित परिचालन का सर्वोत्तम बटालियन ट्रॉफी प्राप्त करते हुए



श्री एल. लाउजेम, कमा., 205 बटा., सर्वोत्तम कोबरा बटालियन ट्रॉफी प्राप्त करते हुए



श्री आर.टी. परमहंस, पु.उ.म.नि. ग्रुप केन्द्र, पूणे, सर्वोत्तम ग्रुप केन्द्र की ट्रॉफी प्राप्त करते हुए



श्री डी.एस. राठोर, पु.उ.म.नि., आरटीसी नीमच सर्वोत्तम प्रशिक्षण केन्द्र की ट्रॉफी प्राप्त करते हुए

महिलाओं द्वारा अदभुत करतब







डॉग शो







बड़ा खाना



सांस्कृतिक कार्यक्रम







के.रि.पु. बल को वीरता के लिए पुनः 44 पदक



स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर, सबसे बड़े अर्धसैनिक बल को एक बार फिर सभी पुलिस बलों में सबसे अधिक वीरता पुलिस पदकों से अलंकृत किया गया है। इस बार उसे 44 वीरता पदकों से सम्मानित किया गया है। इनमें 01 वीरता के लिये राष्ट्रपति का पुलिस पदक एवं 43 वीरता के लिए पुलिस पदक शामिल हैं, जिनमें 10 पदक मरणोपरांत प्रदान किए गए हैं। देश के सबसे कठिन क्षेत्रों एवं वामपंथी उग्रवाद प्रभावित क्षेत्रों में तैनात बल के अधिकारियों एवं कार्मिकों को असाधारण कार्य और अदम्य साहस प्रदर्शन के लिए एक साथ इतने बड़े पैमाने पर वीरता पदकों से सम्मानित किया गया है। 41 अधिकारियों एवं जवानों को वामपंथी उग्रवाद क्षेत्रों एवं 03 को जम्मू–कश्मीर के संवेदनशील क्षेत्रों में तैनाती के दौरान दिखाए गए शौर्य के लिए ये पदक प्रदान किए गए हैं।

निरीक्षक गुलाम नबी भट्ट

(वीरता के लिये राष्ट्रपति का पुलिस पदक)



वीरता के लिये राष्ट्रपति का पुलिस पदक पाने वाले निरीक्षक गुलाम नबी भट्ट, जो 23 बटालियन श्रीनगर (जम्मू एवं कश्मीर) में तैनात थे, ने अप्रैल 2014 में श्रीनगर शहर के सौरा इलाके में विपरीत परिस्थितियों में विशिष्ट वीरता और अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन करते हुए उन दो आंतकवादियों को मार गिराया जिन्होंने एक घर में घुसकर वहां रहने वालों को बंधक बनाया हुआ था।

55 वर्षीय निरीक्षक भट्ट ने यह साबित कर दिया है कि कुछ कर गुजरने के लिए उम्र बाधक नहीं होती।

शहीद श्री मोहम्मद नेहाल आलम, उप कमाण्डेन्ट 219 बटालियन को मरणोपरांत वीरता के पुलिस पदक से सम्मानित किया गया है। उन्होंने दक्षिण बस्तर, छत्तीसगढ़ में नक्सलियों के गढ़ सुकमा जिले में एक ऑपरेशन में अपनी टीम का नेतृत्व करते हुए उच्च कोटि की वीरता एवं अदम्य साहस का परिचय दिया। उन्होंने वीरता के लिए पुलिस पदक प्राप्त करने वाले सिपाही आदित्य कुमार के साथ घात लगाए हुए माओवादियों से मुकाबला करके एक खूंखार माओवादी को मार गिराया एवं कई अन्य को गम्भीर रूप से घायल कर दिया। हालांकि, शहीद मोहम्मद नेहाल आलम सुकमा जिले में एक और ऑपरेशन के दौरान आइईडी ब्लास्ट में गम्भीर रूप से घायल होने के कारण शहीद हो गए। 8 अन्य जवानों को भी छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले में माओवादियों के खिलाफ अभियान में उच्च कोटि की वीरता एवं अदम्य साहस प्रदर्शन करने के लिए मरणोपरांत सम्मानित किया गया है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल सबसे अधिक अलंकृत पुलिस बल है, जिसे अब तक 1570 पदकों से सम्मानित किया जा चुका है। इनमें 01 जॉर्ज क्रॉस, 03 किंग्स पी.एम.जी, 01 अशोक चक्र, 01 कीर्ति चक्र, 01 पद्म श्री, 01 वीर चक्र, 14 शौर्य चक्र, 49 पी.पी.एफ. एस.एम.जी, 192 वीरता के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक, 01 युद्ध सेवा पदक, 05 सेना पदक, 04 विशिष्ट सेना पदक, 1189 वीरता के लिए पुलिस पदक, 05 आई.पी.एम.जी., 03 जीवन रक्षा पदक और जान बचाने के लिए 100 प्रधानमंत्री के पुलिस पदक शामिल हैं। वर्ष 1939 में बल के गठन के बाद अब तक बल के 2052 अधिकारियों एवं जवानों ने राष्ट्र सेवा में अपने प्राण न्यौछावर किए हैं।

उपरोक्त के अलावा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को 05 विशिष्ट सेवा के लिय राष्ट्रपति का पुलिस पदक और 58 सराहनीय सेवा के लिये पुलिस पदक प्रदान किये गये हैं।

****

वीरता के लिए पुलिस पदक (मरणोपरांत)



शहीद मो. नेहाल आलम
उप कमांडेंट



शहीद सिपाही
अमिताव मिश्रा



शहीद सिपाही
एच.एस. कुशवाह



शहीद सिपाही
नेकपाल



शहीद सिपाही
मदनलाल आखे



शहीद सिपाही
दिगंत बयान



शहीद सिपाही
दिलीप कुमार



शहीद सिपाही
सुनील राम



शहीद सिपाही
जिग्नेश पटेल

वीरता के लिए पुलिस पदक



श्री सतीश कुमार
द्वितीय कमान अधिकारी



श्री देवेन्द्र सिंह कासवा
उप कमांडेंट



श्री राकेश कुमार मिश्रा
उप कमांडेंट



श्री राजेन्द्र प्रसाद रैगर
सहायक कमांडेंट



श्री कुमार ब्रजेश
सहायक कमांडेंट



श्री अभिषेक चौधरी
सहायक कमांडेंट



श्री जी.एस भंडारी
सहायक कमांडेंट



श्री कमल किशोर
सहायक कमांडेंट



श्री संजय कुमार
सहायक कमांडेंट



श्री आजाद सिंह
सहायक कमांडेंट

वीरता के लिए पुलिस पदक



उपनिरीक्षक
हंसराज मीणा



उपनिरीक्षक
पी.के. सेठी



सहायक उपनिरीक्षक
अजेन्द्र सिंह



हवलदार
बरून चन्द्र मंडल



हवलदार
सुवालाल कोके



सिपाही
धमेंद्र कुमार सिंह



सिपाही (चालक)
मोहम्मद आसिफ



सिपाही
दुला राम



सिपाही
सुरेंद्र कुमार



सिपाही
अदित कुमार



सिपाही
प्रताप सिंह



सिपाही
अनिल कुमार



सिपाही
जयंत तालुकदार



सिपाही
शिंदे मनोज गोरख



सिपाही
कोहक अदिनाथ गुलाब



सिपाही
संजीत सिंह



सिपाही
चेल्लाथुरई मुरूगन



सिपाही
राजा इम्बा कुमार



सिपाही
मिथिलेश पाल



सिपाही
सत्यम कुमार



सिपाही
के. शशिकांत



सिपाही
सचिन कुमार



सिपाही
मुख्तियार अहमद ख़ान



सिपाही
एस.करूणाकरण

दिव्यांग साईकिल चालक दल महानिदेशक द्वारा सम्मानित

सीमा सुरक्षा बल द्वारा दिनांक 05 अगस्त, 2016 से 15 अगस्त, 2016 तक मनाली से खारडुंग्ला, लेह तक (कुल 513 कि.मी.), दिव्यांगों के लिए आयोजित साईकिल चालन अभियान (अनन्त सवारी–2016) का आयोजन किया गया। इस अभियान में के.रि.पु.बल के श्री आर.के. सिंह (शौर्य चक्र), उप कमाण्डेन्ट, 221 बटालियन, निरीक्षक सुशील कुमार (वीरता पदक.), बिहार सेक्टर मुख्यालय एवं सिपाही बीरभद्र सिंह 101 आर.ए.एफ. बटालियन ने भाग लेकर सफलतापूर्वक अभियान को पूरा किया, जिससे बल की गरिमा में अभिवृद्धि हुई है।

इनके उत्साह को बढ़ाने और मनोबल को बनाए रखने के लिए महानिदेशक ने इन्हें महानिदेशक का डिस्क एवं प्रशंसा पत्र से सम्मानित किया।



श्री आर.के. सिंह, उप.कमा., डिस्क एवं प्रशंसा पत्र प्राप्त करते हुए





निरीक्षक सुशील कुमार, डिस्क एवं प्रशंसा पत्र प्राप्त करते हुए





सिपाही बीरभद्र सिंह, डिस्क एवं प्रशंसा पत्र प्राप्त करते हुए



शहीद कमांडेंट श्री प्रमोद कुमार को नमन



शहीद कमांडेंट श्री प्रमोद कुमार तिरंगे को सलामी देते हुए

कश्मीर घाटी में सीआरपीएफ की 49वीं बटालियन में कमांडिंग ऑफीसर के तौर पर तैनात 44 वर्षीय कमांडेंट प्रमोद कुमार 15 अगस्त 2016 को तिरंगे को सलामी देते हुए जब देश की एकता और अखण्डता को बनाये रखने के लिए अपना सर्वस्व बलिदान देने की शपथ ले रहे थे तो कोई नहीं जानता था कि चन्द घड़ियों के बाद वह अपनी इस शपथ को अपने प्राणों की आहुति देकर पूरा करेंगे। श्री कुमार जिस समय जवानों को संबोधित कर रहे थे, उसी दौरान नौहट्टा में जामिया मस्जिद के पास आतंकी हमला हो गया। समारोह के सम्पन्न होते ही जैसे ही उन्हें हमले का पता चला तो वह तुरन्त मौके पर पहुँच गये। उन्होंने वहाँ एक इमारत में छिपे आतंकवादियों को मार गिराने के लिए अपने जवानों की अगुआई की। इसी दौरान एक आतंकी को आमने सामने की लड़ाई में मार गिराते हुए वह गंभीर रूप से जख्मी हो गये। उनकी गर्दन में गोली लगी थी। कमांडेंट को उसी समय सेना के 92 बेस अस्पताल ले जाया गया, जहाँ करीब दो घंटे बाद उन्होंने अंतिम साँस ली। शहीद कमांडेंट प्रमोद कुमार का जन्म बिहार के बख्तियारपुर में 15 अक्टूबर 1972 को हुआ था और इनका लालन–पालन जामताड़ा जिले में हुआ था। इनके परिवार में माता–पिता, पत्नी एवं 7 साल की बेटी है। ये दिनांक 01/01/1998 को सीधे राजपत्रित अधिकारी के रूप में केरिपुबल में भर्ती हुए थे। इनका प्रशिक्षण केरिपुबल अकादमी माउंट आबू में हुआ था एवं इन्होंने जम्मू एवं कश्मीर, त्रिपुरा, असम, बिहार, झारखंड एवं आंध्रप्रदेश में अपनी उत्कृष्ट सेवायें प्रदान की थीं। सेवा के दौरान उन्हें 2011, 2014 में महानिदेशक का प्रशंसा प्रमाण पत्र एवं 2015 में महानिदेशक का प्रशंसा डिस्क से सम्मानित किया गया था। श्रीनगर में बल के ठिकाने पर तिरंगा फहराने के बाद कमांडेंट प्रमोद कुमार ने अधिकारियों एवं जवानों को देश की एकता एवं अंखडता के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ देने के लिए प्रेरित किया।

****



शहीद कमांडेंट श्री प्रमोद कुमार स्वतंत्रता दिवस परेड को सम्बोधित करते हुए

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले
वतन पर मरनेवालों का यही बाक़ी निशाँ होगा



शहीद कमांडेंट श्री प्रमोद कुमार की बेटी आरना अपनी माँ को दिलाशा देती हुई एवं अपने पापा को नमन करती हुई।

शहीदों को शत् शत् नमन



शहीद सिपाही गोडसे सतीश गाउंड, 85 बटा.
20–05–1988 से 16–05–2016



शहीद सिपाही बालेन हरीजन, 203 बटा.
14–02–1987 से 17–06–2016



शहीद सिपाही अपूर्ब डेका, 205 बटा.
01–01–1987 से 19–06–2016



शहीद हव. वीर सिंह, 161 बटा.
10–08–1968 से 25–06–2016



शहीद हव. जगतार सिंह, 161 बटा.
12–03–1971 से 25–06–2016



शहीद सिपाही संतोष साव, 161 बटा.
15–01–1984 से 25–06–2016



शहीद सिपाही सतीष चंद, 161 बटा.
20–06–1977 से 25–06–2016



शहीद उ.नि./टी संजय कुमार सिंह, 161 बटा.
28–12–1972 से 25–06–2016



शहीद उ.नि./एमटी जी. जयचंद्रा, 161 बटा.
24–04–1965 से 25–06–2016



शहीद सिपाही के. यादव, 161 बटा.
17–02–1980 से 25–06–2016



शहीद सिपाही राजेश कुमार, 161 बटा.
09–02–1983 से 25–06–2016



शहीद सिपाही दिबाकर दास, 138 बटा.
01–03–1982 से 03–07–2016



शहीद सिपाही अजय कुमार, 209 बटा.
25–10–1986 से 11–07–2016



शहीद हव. के. ओपेन्द्र सिंह, 205 कोबरा
01–02–1972 से 18–07–2016



शहीद हव. अनिल कुमार सिंह, 205 कोबरा
20–12–1981 से 18–07–2016



शहीद सिपाही मनोज कुमार, 205 कोबरा
20–05–1988 से 18–07–2016



शहीद सिपाही रवि कुमार, 205 कोबरा
10–01–1989 से 18–07–2016



शहीद सिपाही दिवाकर कुमार, 205 कोबरा
01–01–1987 से 18–07–2016



शहीद सिपाही हरेन्द्र पंवार, 205 कोबरा
12–02–1991 से 18–07–2016



शहीद सिपाही सिनोद कुमार, 205 कोबरा
01–07–1990 से 18–07–2016



शहीद सिपाही पालास मंडल, 205 कोबरा
19–01–1988 से 18–07–2016



शहीद सिपाही दीपक घोष, 205 कोबरा
25–08–1989 से 18–07–2016



शहीद सिपाही रमेश कुमार, 205 कोबरा
10–02–1988 से 18–07–2016



शहीद सिपाही प्रांजल पचनी, 208 कोबरा
01–12–1989 से 30–07–2016

इतनी सी बात हवाओं को बताये रखना, रोशनी होगी चिरागों को जलाये रखना।
लहूँ देकर की है जिसकी हिफाजत हमने, ऐसे तिरंगे को अपने दिल में बसाये रखना।।

केरिपुबल ने किया कौशल विकास मंत्रालय के साथ समझौता पर हस्ताक्षर



दिनांक 30 अगस्त, 2016 को प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत भारत को कुशल राष्ट्र बनाने के माननीय प्रधानमंत्री जी के सपने को साकार करते हुए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने कौशल विकास मंत्रालय के साथ समझौता हस्ताक्षर करके इस दिशा में समस्त पुलिस बलों में प्रथम बल बन गया है। गृह मंत्रालय के अधीन सबसे बड़े अर्धसैनिक बल के रूप में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल भारत के विस्तृत भू–भाग में अपनी उपस्थिति दर्ज करते हुए देश के किसी भी कोने में उठने वाले आंतरिक उपद्रव से देश की सुरक्षा की कठिन जिम्मेवारी को बखूबी निभा रहा है। देश के अधिकतम दूर–दराज वाले क्षेत्रों में इसकी उपस्थिति ने न केवल माओवाद प्रभावित क्षेत्रों बल्कि जम्मू व कश्मीर तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र के युवाओं के बीच प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत कौशल विकास के लाभ को पहुँचाने में यह बल महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इस कौशल विकास योजना का लाभ केरिपुबल कार्मिकों की पत्नियां/पति, अशक्त कार्मिक, शहीदों की विधवाएं, केरिपुबल कार्मिकों के बच्चे अथवा इच्छुक सिविल व्यक्ति उठा सकते हैं। उन्हें परिधान निर्माण, सौन्दर्य एवं सुसज्जा, खाद्य–प्रसंस्करण, सूचना और प्रोद्ययोगिकी इत्यादि का प्रशिक्षण देश में स्थित केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के विभिन्न ग्रुप केन्द्रों/संस्थानों में दिया जाएगा। देश के अगम्य क्षेत्रों के दूर–दराज गांवों में आदिवासी लोगों को कौशल प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए वहां जाने वाले कौशल प्रशिक्षकों को सहायता एवं आवश्यक सुरक्षा भी यह बल उपलब्ध करवाएगा। कौशल विकास मंत्रालय के साथ हाथ मिलाकर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने न केवल प्रधानमंत्री जी के सपनों को मूर्त रूप देने में पहल की है बल्कि मुख्य धारा से अलग–थलग पड़े लोगों के मन में विश्वास एवं निष्ठा जगाने में यह बल आगे सेतु का काम करेगा।

इस अवसर पर माननीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह एवं माननीय कौशल विकास एवं उद्यमवृत्ति मंत्री श्री राजीव प्रताप रूड़ी की उपस्थिति में एम0ओ0यू0 पर हस्ताक्षर किये गए। गृह मंत्रालय एवं कौशल विकास मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ केरिपुबल के महानिदेशक श्री के0 दुर्गा प्रसाद इस अवसर पर उपस्थित रहे।

****





सहायक निदेशक(राजभाषा) की कलम से



महिपाल सिंह रावत
सहा. निदेशक (राजभाषा)

भाषा विचारों की अभिव्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है। भाषा संस्कृति से जुड़ी होती है। यह हमें संस्कार देती है। भाषा के स्वरूप का निर्माण स्थितियों/परिस्थितियों से होता है। किसी भाषा के द्वारा ही हम एक दूसरे के करीब आते हैं और सम्पर्क स्थापित करते हैं। भाषा विभिन्न समुदायों के लोगों को परस्पर जोड़ने का माध्यम है। भाषा राष्ट्रीय एकता बनाए रखने में सहायक होती है। भारत में हिंदी ही एक सर्वमान्य भाषा है जो विभिन्न प्रांतीय भाषाओं के बीच सम्पर्क स्थापित करने के माध्यम की एक कड़ी है। राष्ट्र की एकता को और भी सुदृढ़ बनाने के लिए एक सार्वभौम भाषा की जरूरत होती है। वही भाषा 'राजभाषा' कहलाती है जिस भाषा में राज्य के सभी कार्य हों और सभी अपने विचारों को सरलता से व्यक्त कर सकें। हिंदी भारत के विशाल भू–भाग की भाषा है। सम्पर्क भाषा के रूप में इसका प्रयोग संपूर्ण भारत में किया जाता है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह हमेशा दूसरों के सम्पर्क में रहना चाहता है। इसके लिए अपनी बातों को वह संचार–साधनों से अन्य लोगों तक पहुंचाता है। प्राचीन काल में व्यक्ति के रूप में संदेशवाहकों, कबूतरों आदि माध्यमों से आवश्यक संदेश पहुंचाने का काम लिया जाता था। लेकिन आज वैज्ञानिक युग है। नित्य नए अविष्कारों ने समूचे परिवेश को बदल डाला है। आज दूरदर्शन, आकाशवाणी, वाररलैस सैट, फोन, मोबाइलों ने संचार के क्षेत्र में बहुत बड़ी क्रांति ला दी है। विश्व के किसी भी क्षेत्र में कोई घटना होने पर कुछ ही क्षणों में उसकी जानकारी पूरे विश्व को मालूम हो जाती है और उसकी प्रतिक्रिया शुरू हो जाती है।

पूरे देश को एकता के सूत्र मे पिरोने का कार्य हिंदी ही कर सकती है। हिंदी का भारतीय भाषाओं के साथ अटूट संबंध है। संस्कृत हिंदी और सभी भारतीय भाषाओं की जननी है। इसलिए एक भाषा के शब्द दूसरी भाषा में समा चुके हैं। जनसामान्य द्वारा अपनाए गए शब्दों को हिंदी में बेहिचक ग्रहण किया गया है। हिंदी का अपना एक गौरवपूर्ण इतिहास रहा है। स्वतंत्रता आंदोलन के समय हिंदी ने ही राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का काम किया। राष्ट्रीय एकता और चिंतन को इसने अधिक सुदृढ़ता प्रदान की है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपने संघर्ष की शुरूआत ही प्रवासी अफ्रीकी लोगों के बीच शुरू की थी। हमारे देश की युवा–शक्ति के प्रतीक नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने आजाद हिंद फौज और आजाद हिंद सरकार की स्थापना दक्षिण–पूर्व एशिया में की थी। इन दोनों महापुरूषों का माध्यम भाषा के रूप में हिंदी ही थी। देश के अनेक महापुरूषों, संतो, सूफियों ने भी इसे जनाधार प्रदान किया है। इस तरह हिंदी ने राष्ट्र को संगठित करने का जो कार्य किया है वह इतिहास से प्रमाणित हो चुका है।

भाषा कठिनता से सरलता की ओर बढ़ती है और वाक्य में प्रयोग करने में ही शब्द का एक निश्चित अर्थ होता है। भाषा परिवर्तनशील होती है। यह प्रयोग करने से निखरती और संवरती है। संविधान में हिंदी को सशक्त भाषा के रूप में स्थायित्व प्रदान किया गया है और संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक विभिन्न उपबंधों में राजभाषा के संबंध में उल्लेख किया गया है। हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया गया है। 14 सितंबर 1949 को भारतीय



संविधान सभा ने हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। हिंदी भाषा का विकास, जनता की राष्ट्रीय भावना के विकास का प्रतीक है। अतः यह हमारा नैतिक दायित्व है कि सच्ची निष्ठा से संविधान की अनुपालना सुनिश्चित करें तथा राजभाषा हिंदी की प्रगति के लिए निरंतर प्रयासरत रहने का संकल्प दोहराएं और सरकार द्वारा वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित किए गए लक्ष्यों को प्राप्त करें।

****

हिन्दी साहित्य का इतिहास



सत्येन्द्र सिंह
निरीक्षक/हिन्दी अनुवादक

हिन्दी साहित्य पर यदि समुचित परिप्रेक्ष्य में विचार किया जाए तो स्पष्ट होता है कि हिन्दी साहित्य का इतिहास अत्यंत विस्तृत व प्राचीन है। सुप्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक डॉ हरदेव बाहरी के शब्दों में, हिन्दी साहित्य का इतिहास वस्तुतः वैदिक काल से आरम्भ होता है।

हिन्दी भाषा के उद्भव और विकास के सम्बन्ध में प्रचलित धारणाओं पर विचार करते समय हिन्दी भाषा की उत्पत्ति दसवीं शताब्दी के आसपास की प्राकृताभास भाषा तथा अपभ्रंश भाषाओं की ओर जाता है। अपभ्रंश शब्द की व्युत्पत्ति और जैन रचनाकारों की अपभ्रंश कृतियों का हिन्दी से सम्बन्ध स्थापित करने के लिए जो तर्क और प्रमाण हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रन्थों में प्रस्तुत किये गए हैं उन पर विचार करना भी आवश्यक है। सामान्यतः प्राकृत की अन्तिम अपभ्रंश अवस्था से ही हिन्दी साहित्य का आविर्भाव स्वीकार किया जाता है। उस समय अपभ्रंश के कई रूप थे और उनमें सातवीं–आठवीं शताब्दी से ही पद्य रचना प्रारम्भ हो गई थी।

साहित्य की दृष्टि से पद्यबद्ध जो रचनाएँ मिलती हैं वे दोहा रूप में ही हैं और उनके विषय, धर्म, नीति, उपदेश आदि प्रमुख हैं। राजाश्रित कवि और चारण नीति, शृंगार, शौर्य, पराक्रम आदि के वर्णन से अपनी साहित्य–रुचि का परिचय दिया करते थे। यह रचना–परम्परा आगे चलकर शैरसेनी अपभ्रंश या प्राकृताभास हिन्दी में कई वर्षों तक चलती रही। पुरानी अपभ्रंश भाषा और बोलचाल की देशी भाषा का प्रयोग निरन्तर बढ़ता गया। इस भाषा को विद्यापति ने देसी भाषा कहा है, किन्तु यह निर्णय करना सरल नहीं है कि हिन्दी शब्द का प्रयोग इस भाषा के लिए कब और किस देश में प्रारम्भ हुआ। हाँ, इतना अवश्य कहा जा सकता है कि प्रारम्भ में हिन्दी शब्द का प्रयोग विदेशी मुसलमानों ने किया था। इस शब्द से उनका तात्पर्य 'भारतीय भाषा' का था।

हिन्दी साहित्य के विकास के विभिन्न काल

हिन्दी साहित्य का आरंभ आठवीं शताब्दी से माना जाता है। यह वह समय है जब सम्राट् हर्ष की मृत्यु के बाद देश में अनेक छोटे छोटे शासनकेन्द्र स्थापित हो गए थे जो परस्पर संघर्षरत रहा करते थे। विदेशी मुसलमानों से भी इनकी टक्कर होती रहती थी। इन दिनों उत्तर भारत के अनेक भागों में बौद्ध धर्म का प्रचार था। बौद्ध धर्म का विकास कई रूपों में हुआ जिनमें से एक वज्रयान कहलाया। वज्रयानी तांत्रिक थे और सिद्ध कहलाते थे। हिन्दी का प्राचीनतम साहित्य इन्हीं वज्रयानी सिद्धों द्वारा तत्कालीन लोकभाषा पुरानी हिन्दी में लिखा गया। इसके बाद नाथपंथी साधुओं का समय आता है। इन्होंने बौद्ध, शांकर, तंत्र, योग और शैव मतों के मिश्रण से अपना नया पंथ चलाया जिसमें सभी वर्गों और वर्णों के लिए धर्म का एक सामान्य मत प्रतिपादित किया गया था।

आदिकाल (1000 से 1300 ई.)

ग्यारहवीं सदी के लगभग देशभाषा हिन्दी का रूप अधिक स्फुट होने लगा। उस समय पश्चिमी हिन्दी प्रदेश में अनेक छोटे छोटे राजपूत राज्य स्थापित हो गए थे। ये परस्पर अथवा विदेशी आक्रमणकारियों से प्रायः युद्धरत रहा करते थे। इन्हीं राजाओं के संरक्षण में रहने वाले चारणों और भाटों का राजप्रशस्तिमूलक काव्य वीरगाथा के नाम से अभिहित किया गया। इन वीरगाथाओं को रासो कहा जाता है। इनमें आश्रयदाता राजाओं के शौर्य और पराक्रम का ओजस्वी वर्णन करने के साथ ही उनके प्रेमप्रसंगों का भी उल्लेख है। रासो ग्रन्थों में संघर्ष का कारण प्रायः प्रेम दिखाया गया है। इन रचनाओं में इतिहास और कल्पना का मिश्रण है।

इसी कालावधि में मैथिल कोकिल विद्यापति हुए जिनकी पदावली में मानवीय सौंदर्य और प्रेम की अनुपम व्यंजना मिलती है। कीर्तिलता और कीर्तिपताका इनके दो अन्य प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। अमीर खुसरो का भी यही समय है। इन्होंने ठेठ खड़ी बोली में अनेक पहेलियाँ, मुकरियाँ और दो सखुन रचे हैं। इनके गीतों, दोहों की भाषा ब्रजभाषा है।

भक्तिकाल (1300 से 1650 ई.)

तेरहवीं सदी तक धर्म के क्षेत्र में बड़ी अस्त व्यस्तता आ गई। जनता में सिद्धों और योगियों आदि द्वारा प्रचलित अंधविश्वास फैल रहे थे। शास्त्र ज्ञान संपन्न वर्ग में भी रूढ़ियों और आडंबर की प्रधानता हो चली थी। मायावाद के प्रभाव से लोकविमुखता और निष्क्रियता के भाव समाज में पनपने लगे थे। ऐसे समय में भक्ति आंदोलन के रूप में ऐसा भारतव्यापी विशाल सांस्कृतिक आंदोलन उठा जिसने समाज में उत्कर्ष विधायक सामाजिक और वैयक्तिक मूल्यों की प्रतिष्ठा की।

भक्ति आंदोलन का आरंभ दक्षिण के आलवार संतों द्वारा दसवीं सदी के लगभग हुआ। वहाँ शंकराचार्य के अद्वैतमत और मायावाद के विरोध में चार वैष्णव संप्रदाय खड़े हुए। इन चारों संप्रदायों ने उत्तर भारत में विष्णु के अवतारों का प्रचारप्रसार किया।

हिन्दी में निर्गुण और सगुण के नाम से भक्तिकाव्य की दो शाखाएँ साथ साथ चलीं। निर्गुणमत के दो उपविभाग हुए – ज्ञानाश्रयी और प्रेमाश्रयी। पहले के प्रतिनिधि कबीर और दूसरे के जायसी हैं। सगुणमत भी दो उपधाराओं में प्रवाहित हुआ – रामभक्ति और कृष्णभक्ति। पहले के प्रतिनिधि तुलसी हैं और दूसरे के सूरदास।

ज्ञानश्रयी शाखा के प्रमुख कवि कबीर पर तात्कालिक विभिन्न धार्मिक प्रवृत्तियों और दार्शनिक मतों का सम्मिलित प्रभाव है। उनकी रचनाओं में धर्म सुधारक और समाज सुधारक का रूप विशेष प्रखर है। उन्होंने आचरण की शुद्धता पर बल दिया। बाह्याडंबर, रूढ़ियों और अंधविश्वासों पर उन्होंने तीव्र कशाघात किया। मनुष्य की क्षमता का उद्घोष कर उन्होंने निम्नश्रेणी की जनता में आत्मगौरव का भाव जगाया। इस शाखा के अन्य कवि रैदास, दादू हैं।

प्रेमाश्रयी धारा के सर्वप्रमुख कवि जायसी हैं जिनका ''पदमावत'' अपनी मार्मिक प्रेमव्यंजना, कथारस और सहज कलाविन्यास के कारण विशेष प्रशंसित हुआ है। इनकी अन्य रचनाओं में ''अखरावट'' और ''आखिरी कलाम'' आदि हैं, जिनमें सूफी संप्रदायसंगत बातें हैं। इस धारा के अन्य कवि हैं कुतबन, मंझन, उसमान, शेख, नबी और नूर मुहम्मद आदि।

आज की दृष्टि से इस संपूर्ण भक्तिकाव्य का महत्व उसक धार्मिकता से अधिक लोकजीवनगत मानवीय अनुभूतियों और भावों के कारण है। इसी विचार से भक्तिकाल को हिन्दी काव्य का स्वर्ण युग कहा जा सकता है।

रीतिकाल (1650 से 1850 ई.)

रीतिकाव्य रचना का आरंभ एक संस्कृतज्ञ ने किया। ये थे आचार्य केशवदास, जिनकी सर्वप्रसिद्ध रचनाएँ कविप्रिया, रसिकप्रिया और रामचंद्रिका हैं। केशव के कई दशक बाद चिन्तामणि से लेकर अठारहवीं सदी तक हिन्दी में रीतिकाव्य का अजस्र स्रोत प्रवाहित हुआ जिसमें नर–नारी–जीवन के रमणीय पक्षों और तत्संबंधी सरस संवेदनाओं की अत्यंत कलात्मक अभिव्यक्ति व्यापक रूप में हुई।

रीतिकाल के कवि राजाओं और रईसों के आश्रय में रहते थे। वहाँ मनोरंजन और कलाविलास का वातावरण स्वाभाविक था। बौद्धिक आनंद का मुख्य साधन वहाँ उक्तिवैचित्र्य समझा जाता था। ऐसे वातावरण में लिखा गया साहित्य अधिकतर शृंगारमूलक और कलावैचित्र्य से युक्त था। पर इसी समय प्रेम के स्वच्छंद गायक भी हुए जिन्होंने प्रेम की गहराइयों का स्पर्श किया है। मात्रा और काव्यगुण दोनों ही दृष्टियों से इस समय का नर–नारी प्रेम और सौंदर्य की मार्मिक व्यंजना करने वाला काव्य साहित्य महत्वपूर्ण है।

रीतिकाव्य मुख्यतः मांसल शृंगार का काव्य है। इसमें नर–नारी जीवन के स्मरणीय पक्षों का सुंदर उद्घाटन हुआ है। अधिक काव्य मुक्तक शैली में है, पर प्रबंधकाव्य भी हैं। इन दो सौ वर्षों में शृंगारकाव्य का अपूर्व उत्कर्ष हुआ। पर धीरे धीरे रीति की जकड़ बढ़ती गई और हिन्दी काव्य का भावक्षेत्र संकीर्ण होता गया। आधुनिक युग तक आते आते इन दोनों कमियों की ओर साहित्यकारों का ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट हुआ।

आधुनिक काल (1850 से अब तक)

यह आधुनिक युग का आरंभ काल है जब भारतीयों का यूरोपीय संस्कृति से संपर्क हुआ। भारत में अपनी जड़ें जमाने के काम में अँगरेजी शासन ने भारतीय जीवन को विभिन्न स्तरों पर प्रभावित और आंदोलित किया। नई परिस्थितियों के धक्के से स्थितिशील जीवन विधि का ढाँचा टूटने लगा। एक नए युग की चेतना का आरंभ हुआ। संघर्ष और सामंजस्य के नए आयाम सामने आए।

नए युग के साहित्य सृजन की सर्वोच्च संभावनाएँ खड़ी बोली गद्य में

निहित थीं, इसलिए इसे गद्य–युग भी कहा गया है। हिन्दी का प्राचीन गद्य राजस्थानी, मैथिली और ब्रजभाषा में मिलता है पर वह साहित्य का व्यापक माध्यम बनने में अशक्त था। हिन्दी का पहला समाचार पत्र ''उदंत मार्तड'' 1826 ई. में कलकत्ते से प्रकाशित हुआ। राजा शिवप्रसाद और राजा लक्ष्मणसिंह हिन्दी गद्य के निर्माण और प्रसार में अपने अपने ढंग से सहायक हुए। आर्य समाज और अन्य सांस्कृतिक आंदोलनों ने भी आधुनिक गद्य को आगे बढ़ाया।

गद्य साहित्य की विकासमान परंपरा उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध से अग्रसर हुई। इसके प्रवर्तक आधुनिक युग के प्रवर्तक और पथप्रदर्शक भारतेंदु हरिश्चंद्र थे जिन्होंने साहित्य का समकालीन जीवन से घनिष्ठ संबंध स्थापित किया। यह संक्रांति और नवजागरण का युग था। अँगरेजों की कूटनीतिक चालों और आर्थिक शोषण से जनता संत्रस्त और क्षुब्ध थी। समाज का एक वर्ग पाश्चात्य संस्कारों से आक्रांत हो रहा था तो दूसरा वर्ग रूढ़ियों में जकड़ा हुआ था। इसी समय नई शिक्षा का आरंभ हुआ और सामाजिक सुधार के आंदोलन चले। नवीन ज्ञान विज्ञान के प्रभाव से नवशिक्षितों में जीवन के प्रति एक नया दृष्टिकोण विकसित हुआ जो अतीत की अपेक्षा वर्तमान और भविष्य की ओर विशेष उन्मुख था। सामाजिक विकास में उत्पन्न आस्था और जागृत समुदाय चेतना ने भारतीयों में जीवन के प्रति नया उत्साह उत्पन्न किया। भारतेंदु के समकालीन साहित्य में विशेषतः गद्य साहित्य में तत्कालीन वैचारिक और भौतिक परिवेश की विभिन्न अवस्थाओं की स्पष्ट और जीवंत अभिव्यक्ति हुई। इस युग की नवीन रचनाएँ देशभक्ति और समाजसुधार की भावना से परिपूर्ण हैं।

बीसवीं शताब्दी

इस कालावधि की सबसे महत्वपूर्ण घटनाएँ दो हैं – एक तो सामान्य काव्यभाषा के रूप में खड़ी बोली की स्वीकृति और दूसरे हिन्दी गद्य का नियमन और परिमार्जन। इस कार्य में सर्वाधिक सशक्त योग सरस्वती संपादक महावीर प्रसाद द्विवेदी का था। द्विवेदी जी और उनके सहकर्मियों ने हिन्दी गद्य की अभिव्यक्ति क्षमता को विकसित किया।

सुधारवादी आदर्शों से प्रेरित अयोध्या सिंह उपाध्याय ने अपने 'प्रियप्रवास' में राधा का लोकसेविका रूप प्रस्तुत किया और खड़ीबोली के विभिन्न रूपों के प्रयोग में निपुणता भी प्रदर्शित की। मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत भारती' में राष्ट्रीयता और समाज सुधार का स्वर ऊँचा किया और 'साकेत' में उर्मिला की प्रतिष्ठा की। इस समय के अन्य कवि द्विवेदी जी, श्रीधर पाठक, बालमुकुंद गुप्त, नाथूराम शर्मा, गया प्रसाद शुक्ल आदि हैं। ब्रज भाषा काव्य परंपरा के प्रतिनिधि रत्नाकर और सत्यनारायण कविरत्न हैं। इस समय खड़ी बोली काव्यभाषा के परिमार्जन और सामयिक परिवेश के अनुरूप रचना का कार्य संपन्न हुआ। नए काव्य का अधिकांश विचारपरक और वर्णनात्मक है।

सन् 1940 के बाद छायावाद की संवेगनिष्ठ, सौंदर्यमूलक और कल्पनाप्रिय व्यक्तिवाद प्रवृत्तियों के विरोध में प्रगतिवाद का संघबद्ध आंदोलन चला जिसकी दृष्टि समाजबद्ध, यथार्थवादी और उपयोगितावादी है। सामाजिक वैशम्य और वर्गसंघर्ष का भाव इसमें विशेष मुखर हुआ। इसने साहित्य को सामाजिक क्रांति के अस्त्र के रूप में ग्रहण किया। अपनी उपयोगितावादी दृष्टि की सीमाओं के कारण प्रगतिवादी साहित्य, विशेषतः कविता में कलात्मक उत्कर्ष की संभावनाएँ अधिक नहीं थीं, फिर भी उसने साहित्य के सामाजिक पक्ष पर बल देकर एक नई चेतना जाग्रत की।

प्रगतिवादी आंदोलन के आरंभ के कुछ ही बाद नए मनोविज्ञान या मनोविश्लेषण शास्त्र से प्रभावित एक और व्यक्तिवादी प्रवृत्ति साहित्य के क्षेत्र में सक्रिय हुई थी जिसे सन् 1943 के बाद प्रयोगवाद नाम दिया गया। इसी का संशोधित रूप वर्तमानकालीन नई कविता और नई कहानियाँ हैं।

प्रगतिवाद से प्रभावित कथाकारों में यशपाल, उपेंद्रनाथ अश्क, अमृतलाल नागर और नागार्जुन आदि विशिष्ट हैं। आलोचकों में रामविलास शर्मा,नामवर सिंह, विजय देव नारायण साही प्रमुख हैं। कवियों में केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, रांगेय राघव, शिवमंगल सिंह 'सुमन' आदि के नाम प्रसिद्ध हैं। निबन्ध विद्या में इस दौर में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, विद्या निवास मिश्र और कुबेरनाथ राय ने विशेष ख्याति अर्जित की।

नए मनोविज्ञान से प्रभावित प्रयोगों के लिए सचेष्ट कथाकारों में अज्ञेय प्रमुख हैं। मनोविज्ञान से गंभीर रूप में प्रभावित इलाचंद्र जोशी और जैनेंद्र हैं।

****

अनुवाद में सृजनशीलता



आर.के.एल.कर्ण
निरीक्षक/हिन्दी अनुवादक

अनुवाद में सृजनशीलता को समझने से पूर्व अनुवाद की व्याख्या तथा व्युत्पत्ति के बारे में पहले जानना आवश्यक होगा। अनुवाद अनु + वद् + धञ से व्युत्पन्न संस्कृत शब्द है। यह मूलतः संस्कृत के 'वद्' धातु से विकसित शब्द है। संस्कृत में 'वद्' धातु में धञ प्रत्यय लगने से 'वाद' शब्द बनता है। संस्कृत का धञ प्रत्यय जब किसी धातु अथवा मूल शब्द से जुड़ता है, तो व 'आ' की मात्रा में बदलकर शब्द के पहले अक्षर के साथ युक्त हो जाता है। इसी के फलस्वरूप, 'वद् + धञ' मिलकर 'वाद' बनता है। आगे वाद शब्द से अनु उपसर्ग जुड़ने से (अनु + वाद) अनुवाद शब्द निश्पन्न हुआ। अनुवाद शब्द इसी प्रकार से व्युत्पन्न हुआ है।

अनुवाद की यह व्युत्पत्ति भारत की प्राचीन ज्ञान–परंपरा से संबद्ध है। प्राचीन भारत में शिक्षा गुरूकुलों में दी जाती थी। पढ़ने–पढ़ाने के क्रम में गुरू या आचार्य जो कुछ बोलते, सुभाषित अथवा मंत्रों का उच्चारण करते थे, शिष्यगण उन्हें दोहराते थे। इस प्रक्रिया को अनुवचन या अनुवाद कहा जाता था। प्राचीन काल में ज्ञान मौखिक तौर पर गुरू से सुनकर और फिर उसे बार–बार दुहराकर, याद किया जाता था। ज्ञान–अर्जित करने की यही विधि प्रचलित थी। इसीलिए, पाणिनि ने अपने ग्रंथ अष्टाध्यायी में **'अनुवादे चरणानाम्'** कहा है, जिसका अर्थ होता है– पहले कही गई किसी बात को फिर से कहना, पुनः उच्चारण करना। महान विद्वान और दार्शनिक राजा भर्तृहरि ने भी अपने वाक्यपदीय में 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग कथन की आवृत्ति के अर्थ में ही किया है–**'आवृत्तिरनुवादो वा'**। जैमिनीय न्यायमाला की प्रसिद्ध उक्ति–**'ज्ञातस्य कथनमनुवाद'** का अभिप्राय भी यही है कि अनुवाद ज्ञात का पुनर्कथन है ।

अनुवाद स्वभाव से ही सृजनशील होता है, बिना इसके यह संभव ही नहीं कि अनुवाद प्रोक्तिपरक, भावयुक्त हो सके। इसीलिए अनुवाद को कथन का पुनर्कथन, रचना की पुनर्रचना एवं सृजन का पुनर्सृजन कहा जाता है। **प्रो० ई० ए० नाइडा** के अनुसार, स्त्रोत भाषा में कही गई बात को लक्ष्य भाषा में उसके सहज और निकटतम अर्थ देने वाले शब्दों द्वारा व्यक्त करना अनुवाद है परंतु इसमें पहली प्राथमिकता अर्थ को और दूसरी शैली को दी जानी चाहिए। इसी प्रकार, **के० सी० कैटफर्ड** के अनुसार, किसी एक भाषा की पाठ्य सामग्री को किसी दूसरी भाषा में उसी रूप में रूपांतरित करने का नाम अनुवाद है तथा **डॉ० भोलानाथ तिवारी** के अनुसार, एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथासंभव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है।

अनुवाद अधिक गहन विषय क्षेत्र है, जिसमें विश्लेषण, अंतरण और पुनर्गठन की प्रक्रियाएं महत्त्वपूर्ण होती हैं। वैसे भी विश्लेषण, अंतरण और पुनर्गठन भाषिक पाठ के होते हैं और भाषिक पाठ मूलतः वैयक्तिक अभिव्यक्ति होता है। अतएव अनुवाद अध्ययन का नजरिया पूरी तरह से निर्वैयक्तिक अथवा वस्तुनिष्ठ नहीं हो सकता। अनुवाद, **'जाकी रही भावना जैसी'** की भांति होता है। इसमें अनुवादक के अनुभव, ज्ञान और सृजनकौशल की छाप अंतर्निहित रहती है। किसी वाक्य या गद्यांश या पद्यांश का अनुवाद करते समय अनुवादक अपनी सृजनकौशलता, भावपरकता, संदर्भयुक्त के साथ–साथ अपने ज्ञानानुभव का भी प्रयोग करता है जिससे अनुवाद मूल की तरह भाव को व्यक्त करता है। अनुवादक को कभी–कभी किंचित मूल पाठ की सीमा का अतिक्रमण भी करना पड़ता है। अनुवाद चूंकि सृजन का अनुसृजन होता है, इसलिए ऐसा करना उचित होता है । इसे इस उदाहरण के द्वारा भी समझा जा सकता है, जैसे–The time has not ripen to ink nuclear pact. इस अंग्रेजी वाक्य के अनुवाद में ripen और ink शब्दों के सरलार्थ लेने से काम नहीं चलेगा। परमाणु समझौते के सिलसिले में कुछ कच्चा–पक्का नहीं होता है। न ही ink के अर्थ में स्याही की कोई अर्थ संगति होती है। सामान्य रूपांतरण ही मूल कथन जैसा प्रभाव व्यंजित करता है। इस दृष्टि से अनुवाद में मूल कथन के प्रभाव की व्यंजना महत्त्वपूर्ण है, न कि शब्दों के अर्थ और उनके प्रयोग। निश्चय ही ये बातें तर्क–संगत हैं। अतः अनुवाद एक कला भी है जिसके भीतर नयापन, सृजनात्मक एवं कलात्मक का बोध प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में समाविष्ट होता है।

****

हिंदी महाकुंभ में छलका उम्मीदों का अमृत



नागराज द्विवेदी
सू.मे. (हि.अनु.)

सात समंदर पार जोहनसबर्ग में बिछड़े थे, मिले तो ताल–तलैया और शैल–शिखरों की नगरी भोपाल में। जहॉ पूरा शहर रंग–बिरंगी तितलियों की तरह उड़ता दिखा। मोबाइल के संदेश बक्से में जिस रोमन ने पकड़ और जकड़ रखा था, वहॉ खिलखिला उठी देवनागरी। भारत में 32 साल बाद 10वॉ विश्व हिन्दी सम्मेलन 10 सितंबर से 12 सितंबर, 2015 तक भोपाल में आयोजित हुआ। एक बार फिर हिन्दी प्रेमियों के मन में अपनी राजभाषा को विश्वस्तरीय बनाने के लिए उम्मीदों का विशाल पहाड़ खड़ा हुआ। आजादी से पहले भी मध्य प्रदेश में दो बार हिन्दी साहित्य सम्मेलन हुआ एवं इन दोनों ही अवसरों के साक्षी महात्मा गॉधी रहे हैं।

10वें विश्व हिंदी सम्मेलन के तीन दिवसीय महाकुंभ में हिंदी सेवियों ने अपने विचारों की अमूल्य आहूतियॉ डाली। प्रधानमंत्री के शुभारंभ सत्र के पश्चात इबारत पढ़ने लायक सज कर तैयार हो गई। सम्मेलन में विदेशी मूल के लोगों ने कभी धारा प्रवाह तो कभी टूटे–फूटे शब्दों में अपनी बातों को स्पष्ट किया। यह मौका अधिकांश के लिए दुर्लभ था। मध्य अफ्रीका से आए आदुम इदरिस, स्वीडन की उपास्ला यूनिवर्सिटी के प्राध्यापक आइन्स वर्नर वेसलर, इंग्लैण्ड के गिलियम राइट, फेयर, रूस की कैमिला और टेटिना, हालैण्ड की पेत्र डेकर और जापान के शिक्षक टोम्यो मिजो गामी आदि। इनका कहना था कि हिंदी के प्रति व्यक्तिगत रूचि उन्हें भारत फिर भोपाल में खींच लाई। इस सम्मेलन के कुल 12 सत्रों में 2500 प्रतिभागियों ने चुनी चुनिंदा सिफारिशें की :–

1. विदेश नीति में हिंदी
2. प्रशासन में हिंदी
3. विज्ञान के क्षेत्र में हिंदी
4. संचार व सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी
5. विधि तथा न्याय क्षेत्र में हिंदी
6. बाल साहित्य में हिंदी
7. अन्य भाषा–भाषी राज्यों में हिंदी
8. हिंदी पत्रकारिता और संचार माध्यमों में भाषा की शुद्धता
9. गिरमिटिया देशों में हिंदी
10. विदेश में हिंदी शिक्षण– समस्याएं, समाधान
11. विदेशियों के लिए भारत में हिंदी अध्ययन की सुविधा
12. देश और विदेश में प्रकाशन समस्याएँ और समाधान

वक्ताओं के ये भी बोल सक्रिय रहे कि 'यदि हिंदी अड़ जाएगी तो सड़ जाएगी''–प्रसून जोशी, ''हिंदी को प्रचार नहीं, प्रसार की जरूरत है''–अशोक चक्रधर, जबरन हिंदी में अंग्रेजी के शब्दों को न घुसाएँ इत्यादि।

''प्रशासन में हिंदी'' सत्र की अध्यक्षता स्वयं मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने की जिसमें सबसे ज्यादा प्रतिभागी शामिल हुए एवं निम्नलिखित घोषणाएँ भी की:–

1. मध्य प्रदेश में राजभाषा विभाग को पुनर्जीवित किया जाएगा।
2. उच्च न्यायालय के हर फैसले का हिंदी अनुवाद होगा। इसके लिए अनुवादकों की भर्ती होगी।
3. सरकार की सभी अधिसूचनाएँ और आदेश हिंदी में ही होंगे।
4. सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन।
5. सूचना प्रौद्योगिकी संवाद पत्रिका हिंदी में।
6. यूनीकोड प्रशिक्षण मार्गदर्शिका हिंदी में।
7. हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक वर्ष दो लाख का पुरस्कार।
8. किसानों के लिए खेती के बारे में सरल हिंदी में एसएमएस संदेश।
9. देश–दुनिया के श्रेष्ठ साहित्य हिंदी में प्रकाशित किया जाएगा।

सम्मेलन में हिंदी विकास गाथा को समर्पित 'कल आज और कल' की प्रदर्शनी लगाई गई थी। इसमें सूचना और प्राद्योगिकी की बड़ी कंपनियॉ गुगल, सी डैक, एप्पल, माइक्रोसॉफ्ट, वेब दुनिया ने हिंदी भाषा के किए गए कार्यों को दिखाया गया। देश और दुनियाभर के हिंदी लेखन, प्रचार–प्रसार से जुड़े संस्थानों को भी प्रदर्शित किया गया। दूसरी प्रदर्शनी में मध्य प्रदेश सरकार द्वारा पर्यटन, सिंहस्थ–2016 और म0प्र0 के साहित्यकार और विकास पर केन्द्रित था।

तीन दिन चला यह सम्मेलन भोपाल की पहचान बन गया। यहाँ पर हर कोई आने वाला अपने आपको धन्य मान रहा था। अलविदा भोपाल मॉरीशस–2018 में फिर मिलेंगे, इसी तराने के साथ 12 सितंबर को हम सबके नयनों को अश्रुओं से भिगो गया। –'जय हिन्द'–

अपना नाम, अपना काम।
अपनी भाषा में ही मान।।

****

नक्सलवाद
उदभव, प्रभाव और उन्मूलन



ठाकुर दिवाकर सिंह
उप कमा.

कहते है कि किसी भी विद्रोह के बीज उसकी सामाजिक व्यवस्था में छिपे होते हैं। अंग्रेजों द्वारा भारतीय राजव्यवस्था पर शासन करने के साथ ही ऐसी सामाजिक व्यवस्था की नीव डाली गयी जिसने समूचे समाज को दो वर्गों शोषित और शोषक में विभाजित कर दिया। यह सामाजिक प्रतिरूप कमोवेश आजादी मिलने तक जारी रहा। स्वतंत्रता पश्चात भारत सरकार के कठोर कदमों की बदौलत यह वर्ग विभेद कम हुआ परन्तु इसका समूल नाश नहीं हो सका तथा देश के कई क्षेत्रों में उपजा कृषक विद्रोह इसका अंकुरित रूप था।

सामान्यतः ये कृषक आन्दोलन प्रारम्भ में किसान केन्द्रित थे, परन्तु समकालीन विश्व में फैल रही विचारधाराओं से अछूते नहीं रह सके और इसी कड़ी में शुरू हुई नक्सलवाड़ी गाँव के किसान आन्दोलनकारी वामपंथी विचारधारा से प्रभावित होकर वामपंथी पथ की तरफ अग्रसर हो गए।

मोपला विद्रोह, तेभागा और तेलंगाना आन्दोलन की पृष्ठभूमि से 1967 के मार्च में बंगाल राज्य में तीन देशों की सीमा के नजदीक स्थित नक्सलवाड़ी गाँव में शुरू हुआ किसान विद्रोह शुरू में छोटा प्रतीत हुआ, परन्तु कालान्तर में उसने समूचे देश को अपनी जड़ में ले लिया, जिसे समाप्त करने गए पुलिस टीम पर उग्र किसानों ने हमला किया, जिसमें इंस्पेक्टर सोनम वागडी की मृत्यु हो गयी, जिसे नक्सल इतिहास के पहले शहीद पुलिसकर्मी की संज्ञा दी जा सकती है।

इसे पूर्णतया कम्युनिस्ट पार्टी चीन का सहयोग था, जिसने चिंगारी को भड़काने के लिए असम यूनिट को हथियार भी उपलब्ध कराया। इसका असर दिन–प्रतिदिन पंजाब, बिहार, अविभाजित आन्ध्र में फैलने लगा और देश की राजधानी और महत्वपूर्ण शैक्षणिक संगठन भी इससे अछूते नहीं रहे। दिल्ली विश्वविद्यालय के मिरांडा हाउस और टैगोर हॉल में भारत 1969 नाम नाटक का मंचन किया गया तथा जिन 20 छात्रों ने इसमें भाग लिया था वे सभी 1970 की पहली छमाही में गायब हो गए। ऐसा माना जाता है कि कुलीन परिवार से संबंध रखने वाले ये सभी छात्र बिहार, बंगाल, ओड़िसा के ग्रामीण इलाकों में इस विद्रोह को आगे बढ़ने के लिए चले गए। भारतीय सिनेमा जगत में 2005 में इस पृष्ठभूमि तथा घटना के उपर एक फिल्म ''हजारों ख्वाहिशें ऐसी'' भी बनी जो काफी चर्चित रही।

इस दौरान नक्सल विद्रोह और हिंसा अपने चरम पर थे। इससे निपटने के लिए बंगाल के बीरभूम जिले के सीमावर्ती क्षेत्रों में एक संयुक्त ऑप्स बनाया गया, जिसका कोड नाम स्टीपलेचेज दिया गया। 01 जुलाई 1971 से 15 अगस्त 1971 तक चलने वाले इस अभियान में चौथी राजपुताना इन्फैन्ट्री, के0रि0पु0बल, इस्टर्न फ्रन्टियर रायफल, सौराष्ट्र रिजर्व पुलिस बल, स्टेट आर्म्ड पुलिस ने भाग लिया तथा यह काफी सफल भी रहा।

इसी बीच विद्रोही नेता चारू मजुमदार से वैचारिक मतभेदों के कारण बिहार और आंध्र में दूसरे विद्रोही संगठनों का जन्म हुआ। आंकड़ों के अनुसार उस समय देश में कुल 30 नक्सल संगठन सक्रिय थे। नक्सली संगठनों की बढ़ती सक्रियता और हिंसा को देखते हुए 1975 की इमरजेंसी में इन संगठनों को प्रतिबधित कर दिया गया। 1977 के चुनाव में कुछ नक्सल संगठनों ने चुनाव भी लड़ा और तत्कालीन सरकार को अपना समर्थन भी प्रदान किया था।

दूसरी तरफ देश के अन्य राज्यों में इन संगठनों और के. सीतारमैया के नेतृत्व वाले समूह पी.डब्लू.जी. ने बड़े पैमाने पर हिंसा की और एल.टी.टी.आई से ए.के. 47 रायफल भी प्राप्त किया । इस प्रकार इन अनेक संगठनों ने आपस में अलग अलग स्टारों पर अपना विलय करते हुए सितम्बर 2004 में सीपीआई(एम) बनाया।

लो इन्टेनसिटी कन्फलिक्ट के तहत क्रमिक विकास करने वाले इन संगठनों के विकास को हम 4 चरणों में विभाजित कर सकते हैं :–

पहला– श्रीकाकुलम आन्दोलन से नक्सलबाड़ी 1967 तथा 1972 में चारू मजुमदार की मृत्यु।

दूसरा– 80 के दशक में अनेक नक्सल संगठनों का उदय तथा 90 के दशक में पी.डब्लू.जी. की कमान

सीतारमैया से गणपति के हाथों में।

तीसरा– 2001 में पी.डब्लू.जी. का 9वें कांग्रेस का आयोजन तथा आन्ध्र के मुख्यमंत्री पर हमला।

चौथा– पी.डब्लू.जी.,एम.सी.सीआई और अन्य संगठनों का सितम्बर 2004 में विलय। केन्द्र द्वारा इन संगठनों पर पुनः प्रतिबन्ध आरोपित और इस हिंसा को समाप्त करने के लिए व्यापक पैमाने पर अर्द्धसैनिक बलों की नियुक्ति।

अगर हम इन आन्दोलनों के उद्गम क्षेत्रों की तरफ दृष्टिपात करते हैं तो ज्ञात होता है कि यह उन्हीं क्षेत्रों में पल्लवित और पुष्पित हुआ जहाँ–

1. अनुसूचित जनजाति संख्या और बहुमत में थे।
2. सघन जंगल थे।
3. प्रचुर खनिज।
4. राजनैतिक सत्ता की पहुंच से बाहर।
5. दो या तीन राज्यों या जिलों का सीमावर्ती क्षेत्र था।

इस प्रकार एक अनुमान के अनुसार चरमपंथ का प्रभाव लगभग भारत के 165 जिलों, 20 राज्यों, 1500 थानों, 32000 ग्राम पंचायतों और कुल भारतीय जंगल क्षेत्र के 41 प्रतिशत हिस्सों तक फैल चुका है।

उन्मूलन –अब इस हिंसा के दिन प्रतिदिन हो रहे व्यापक रूप के कारण भारत सरकार ने इसे देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे खतरनाक बताया है तथा उन्मूलन हेतु अनेक कदम उठाये गए हैं, जिसमें विकास के साथ–साथ सुरक्षा बलों की तैनाती और कार्यवाई भी शामिल है। परन्तु ये योजनायें तब तक अपेक्षित परिणाम नहीं दे सकती, जब तक शासन की मूलभूत इकाई ग्राम पंचायत और जिला स्तर पर इनका जमीनी क्रियान्वयन न हो। साथ ही साथ राज्य/जिला पुलिस व्यवस्था को मजबूत, सक्षम और प्रभावी बनाते हुए जिला प्रशासन को उन क्षेत्रों तक अपनी योजनायें पहुँचानी होंगी जो अब तक विकास की रोशनी से दूर रहे हैं।

जय हिन्द

****

अपनी हिंदी
एक छोटी सी परीक्षा



पवन कुमार श्रीवास्तव
निरी./हि.अनु.

दो मित्रों के बीच संवाद पर गौर करें। 'मूड कुछ ठीक नही लग रहा तुम्हारा'?' 'हां यार, मैं बड़ा बोर हो रहा हूं।' 'वो तो होगा ही.....लाइफ में न तो कोई चैलेंज है, न कोई एक्साइटमेंट!' हां यार, कुछ ऑसम हो, कुछ यूनिक हो, तब तो कुछ बात है.....।' जाहिर है, ये संवाद हिंग्लिश में हैं और यह खिचड़ी भाषा युवाओं के बीच काफी हद तक पैठ बना चुकी है। लेकिन ध्यान देने वाली बात है कि इनमें एहसासों के लिए भी अंग्रेजी शब्दों का इस्तेमाल हुआ है और डराने वाली बात यह है कि हम बहुत सारी अनुभूतियों के लिए हिंदी शब्द ही भूल चुके हैं। क्या ऐसा नहीं लगता? तो फिर एक परीक्षा ही हो जाए ! ऊपर के वाक्यों में आए अंग्रेजी शब्दों के लिए सटीक हिंदी शब्द बताएं। उनके अर्थ नहीं बताने हैं, स्थानापन्न हिंदी शब्द बताने हैं। तो फिर 'मूड' से ही शुरू करें। मूड के लिए कौन–सा हिंदी शब्द प्रयुक्त होना चाहिए? 'बोर होना' के बजाय हम हिंदी में क्या कह सकते हैं? क्या कहा, कुछ सूझ नहीं रहा? दिमाग पर जोर देना पड़ रहा है? कोई बात नहीं, 'चैलेंज' और 'एक्साइटमेंट' की हिंदी तो आप फटाक से बता देंगे। बहुत बढ़िया! यहां आपको 'गुड' कहने का मन हो रहा है, तो बिना सोचे 'गुड' के लिए हिंदी शब्द बता दीजिए। 'ऑसम' और 'यूनिक' का भी उद्धार कीजिए। अब जरा जवाब मिला लीजिए–मूड : मनोदशा, बोर होना : ऊबना, चैलेंज : चुनौती, एक्साइटमेंट : जोश, उत्तेजना, ऑसम : अद्भुत, गजब, कमाल, यूनिक : अद्वितीय और हां, गुड की जगह कहें शाबाश। 'शाबास' नहीं 'शाबाश'। इस परीक्षा का उद्देश्य आपका शब्द–ज्ञान जानना नहीं, सिर्फ यह पूछना था कि यदि हम अपने अहसासों और मनोदशाओं की अभिव्यक्ति के लिए किसी और पर आश्रित हो जाएंगे, तो हिंदी हमारे दिल की भाषा कैसे बनी रहेगी?

****

अध्ययन यात्रा



ए.के. रॉय
सहा.कमा. (प्रशिक्षु)

जून के माह दिनांक 05/06/2016 से 14/06/2016 के 09 दिनों की अध्ययन यात्रा, अकादमी के सौजन्य से हमारे 47वें बैच को दी गई। इस अध्ययन यात्रा का उद्देश्य एक ऐसे अवसर का सृजन करना था, जिससे हम प्रत्यक्ष रूप से गत नौ माह से दी जा रही प्रशिक्षण और केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के देशभर में कार्यों को जमीनी तौर पर समझ सकें। 92 प्रशिक्षु अधिकारियों के पूरे बैच को पाँच दलों में बॉट दिया गया। जो क्रमशः अमृतसर–जम्मू; कोलकता–गुवाहाटी; मुम्बई–पूना –अहमदाबाद; बेंगलूर– हैदराबाद; तिरूवेंद्रमपुरम– चैन्नई गए। इसमें चौथे दल के रूप में 19 प्रशिक्षु अधिकारियों (5 महिला अधिकारियों सहित) का एक दल उप कमाण्डेन्ट श्री वी0के0 रावत के मार्गदर्शन में बेंगलूर–हैदराबाद के लिए रवाना हुआ।

यह दल पाँचों दलों में यात्रा प्रारंभ करने वाला सबसे पहला दल था। प्रातः 3:50 बजे हम इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के लिए रवाना हुए और हवाई अड्डे पहुँचते ही कक्षा में बताए गए महत्वपूर्ण पहलूओं से रूबरू हुए। जैसे हवाई अड्डों पर केन्द्रीय सशस्त्र सुरक्षा बल का दो स्तरों पर प्रवेश नियंत्रण के लिए होना साथ ही तीसरा स्तर, एपरोन के पास एयरपोर्ट निजी सुरक्षा दल का होना। साथ ही जिस सतर्कता और मुश्तेदी से सी0आई0एस0एफ0 के सदस्य यात्रियों की जॉच कर रहे थे वह उल्लेखनीय था। यूँ तो हम में से बहुत लोगों ने पूर्व में हवाई यात्रा कर रखी थी पर एक सैन्य बल के सदस्य होने के बाद सुरक्षा संबंधी बारीकी को देखने और समझने का उनका यह निश्चय ही प्रथम अनुभव था।

लगभग तीन घंटे के हवाई सफर के बाद हम केम्पे गोड़ा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरे। उस दिन ग्रुप केन्द्र के उप महानिरीक्षक से मुलाकात उनकी व्यस्तता के कारण नहीं हो पायी और टीपू सुल्तान के दुर्ग नन्दी हील को देखने का अवसर मिला। इस दुर्ग को जीतने में अंग्रेजों को बड़ी मशक्कत करनी पड़ी थी। अतः इस दुर्ग को देखने पर प्रशिक्षण की वह बात समझ में आई कि सदैव कैम्प डोमीनीटींग हाईट पर होनी चाहिए।

अगले दिन यानि 6 जून को हमारा कार्यक्रम कर्नाटक के राज्यपाल महोदय से मिलने और विधानसभा और विधान परिषद को देखने का था।

राजभवन की सुरक्षा कर्नाटक की स्थानीय पुलिस कर रही थी और राज्यपाल महोदय के ए0डी0सी0 एक पुलिस अधीक्षक स्तर के अधिकारी थे। माननीय राज्यपाल महोदय श्री वाजू भाई वाला ने अपने संबोधन में हम सैनिक बल को जमीनी हकीकत के विषय में अपनी बात खुल कर रखने की नसीहत दी। साथ ही प्रशासन में कार्यपालिका को सिद्वांतो के कार्यान्वयन में राजनीति से निरपेक्ष रखने की सलाह दी। इसके साथ कानून व्यवस्था का सख्ती से पालन हो इस पर भी जोर दिया।

राजभवन से हम सीधे आजाद भारत की अनूठी स्थापत्य कला की एक मिसाल, कर्नाटक विधान सभा पहुँचे। इस पूरे परिसर की त्रिस्तरीय सुरक्षा भी राज्य के पुलिस के हाथों में ही थी। एक महत्वपूर्ण बात जो सामने आयी वह यह थी कि मार्शल के सुरक्षा निर्वाधन के बाद ही सभा के पीठासीन सदस्य सभा प्रारंभ करने की अनुमति देते हैं।

अगले दिन हम तकनीक की पुलिसिंग और जटिल यातायात व्यवस्था को सुदृढ़ और व्यवस्थित करने के अनूठे प्रयास से साक्षी हुए। बेंगलूर के पुलिस कमीश्नर के सौजन्य से हम लोगों ने अत्याधुनिक तकनीक से लबरेज यातायात प्रबंधन केन्द्र का अवलोकन किया। बी–ट्रैक नामक योजना के तहत यातायात बेहतर करने के प्रयास को हम लोगों ने समझा। यहाँ पर इंटीग्रेटेड़ कम्पलीट मैनेजमेंट सिस्टम तथा यातायात नियम उल्लंघन का वास्तविक समय पर कार्यान्वयन का प्रयास अनूठा है।

इसके बाद बेंगलूर पुलिस कमीश्नर, श्री एन0 एस0 मेघारिक ने वर्तमान समय में पुलिसिंग क्षेत्र में सामाजिक मीड़िया के जरिए पारदर्शिता और कम्यूनिटी पुलिसिंग के सार्थकता और जरूरत की बात कही।

इसके पश्चात हम लोगों ने सीमा सुरक्षा बल के दो प्रशिक्षण संस्थानों का

मुआयना भी किया। यहाँ सबसे पहले हमने अकादमी में दी गई आई0ई0डी0, मैप आदि की जानकारियों का प्रदर्शन, एक मॉडल आई0ई0डी0 रूम तथा मैप म्युजियम का भ्रमण किया। साथ ही ड्रील नर्सरी में ड्रील सुधारक एक्सरसाईज का अवलोकन भी हम लोगों ने किया। यहॉ पर सीमा गश्ती संग्रहालय में गश्ती संबंधी जानकारी भी हम सभी को दी गई।

इसके अगले दिन हम लोगों ने मैसूर के इन्फोसीस परिसर का मुआयना भी किया। इस परिसर की सुरक्षा में तीन निजी सुरक्षा एजेंसियॉ प्रवेश नियंत्रण का कार्य करती है। साथ ही 48 जवानों की सीआईएसएफ की एक कम्पनी क्विक एक्सन टीम के तौर पर तैनात है। इस परिसर की परीधि की सुरक्षा पावर फैसिंग से की जाती है। साथ ही जगह–जगह पर कैमरे के माध्यम से देखभाल की जाती है। परिसर में नवीन तरीके से बना मोर्चा अनुकरणीय था।

दिनांक 9 जून को हमलोगों ने डॉग ब्रिडिंग एंड ट्रैनिंग स्कूल, डीबी एंड टीएस, तरालू का मुआइना भी किया। 220 एकड़ में फैले इस संस्थान में मैलोनोइस नामक कुत्ते की नस्ल को अपने कार्यानुरूप 40 सप्ताह का प्रशिक्षण दिया जाता है। कुत्तों को बाधा पार करने के साथ आई0ई0डी0 ढूढ़ने की कला के हुनर के साक्षी भी हम लोग बनें।

इसी दिन शाम को हम लोग हैदराबाद के लिए रवाना हो गए। हैदराबाद में हमने तीन प्रशिक्षण संस्थानों का अवलोकन किया। सर्वप्रथम राष्ट्रीय पुलिस अकादमी, यहॉ हमें इन्टीग्रेटेड ट्रैनिंग एंड टेस्टिंग फिलोस्फी के बारे में जानकारी दी गई। साथ ही अपने संस्थान की तरह मॉडयूल पर आधारित प्रशिक्षण का भी ज्ञान हुआ। रैंक और बैच (वर्दी संबंधी) में एकरूपता के लिए कोपरेटिव के माध्यम से आनलाईन की व्यवस्था अनुकरणीय थी। इसके पश्चात हम लोगों ने तेलंगाना पुलिस अकादमी का भ्रमण भी किया जहॉ फॉरेसिंक की बारीकियों से परिचय हुआ साथ ही प्रशिक्षण के लिहाज से मॉडल पुलिस स्टेशन, मुट कोर्ट के बारे में जानकारी दी गई। एक पूरे अपराध (डकैती) के जॉच की एक प्रतिलिपि भी हम लोगों को हस्तगत कराया गया। आखिरी दिन यानि 13 जून को हम लोगों ने सीआईएसएफ के प्रशिक्षण संस्थान 'निसा' का भी भ्रमण किया। जहाँ पर हम लोगों की महत्वपूर्ण संस्थानों की सुरक्षा में लाए जाने वाले अनेक परिवहन नियंत्रण उपकरण जैसे बुम बैरियर, ब्लॉकिंग बोलार्ड, टायर कीलर आदि के बारे में जानकारी दी गई।

11 जून को हम लोगों को ग्रुप केन्द्र रंगा रेड्डी में कोत की सुरक्षा और हथियारों को रखने के तरीके की जानकारी प्राप्त हुई। हथियारों की सुरक्षा के लिए इल्कट्रोनिक इर्न्टूडर अलार्म सिस्टम अनुकरणीय था। साथ ही हमें स्टोर हाउस और वहॉ पर लेआउट की जानकारी भी मिली। इसके अलावा किस तरह से ग्रुप केन्द्र अपने बटालियन और सदस्यों की जरूरतों को पूरा करती है इसका प्रत्यक्ष दर्शन भी हम लोगों ने किया।

इसी दिन हम लोगों ने 99 आरएएफ रंगारेड्डी का भी भ्रमण किया। जहाँ पर मोर्टर ट्रांसपोर्ट विंग बहुत समृद्ध दिखा। आरएएफ किस तरह जीरो रेसपोंस टाइम के सिद्धांत पर काम करती हैं इसकी भी जानकारी हमें हुई। साथ ही रियोट ड्रील में प्रयोग में लाए जाने वाले अनेक उपकरणों से परिचय भी हम लोगों को कराया गया। व्यस्त दिनचर्या के बावजूद हम लोगों ने इस अध्ययन यात्रा में कुछ ऐतिहासिक स्थलों और स्थाप्तय के दर्शन भी किया जैसे मैसूर पैलेस, चारमिनार इत्यादि।

दूसरी सिगनल बटालियन का मुआयना भी हम लोगों ने किया। जहॉ पर एरिया वर्कशाप और बेस वर्कशाप के कार्यों को प्रत्यक्ष रूप से देखने का अवसर प्राप्त हुआ। साथ ही आर एंड डी सैल में हो रहे प्रगतियों की जानकारी हुई, जैसे सोलर बैटरी चार्जर, राइटल थैफट अलार्म इत्यादि।

हैदराबाद प्रवास में हम लोगों ने दक्षिणी सेक्टर का भी मुआइना किया। इस दौर से हमें सेक्टर के कार्यों और संचालन की जानकारी प्राप्त हुई। ग्रुप केन्द्र हैदराबाद के उप महानिरीक्षक ने अपने संबोधन में हमारी ट्रैनिंग को किसी विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त करवाए जाने का सुझाव भी दिया।

अतः कुल मिलाकर हमारी यह नौ दिनों की अध्ययन यात्रा सीआरपीएफ के बारे में, संगठन के कार्यकलापों के बारे में, जो पढ़ा उसे जमीनी स्तर पर साकार होते देखने का सुन्दर अवसर था। इससे हमारे प्रशिक्षण को और बेहतर बनाने के विषय कुछ महत्त्वपूर्ण मुद्दों के बारे में भी जानकारी हुई और कवि सुमन के शब्दों में अध्ययन यात्रा की सार्थकता सत्य साबित हुई।

''होय परस्पर परिचय–संचय
गुणहुक उपचय मेलि।
बीजु बीजतरू योगहिं कलम
लगबइछ क्यों रूचि मेलि।।''

****

कविता

सीआरपीएफ अकादमी



सुरेश कुमार शर्मा
निरीक्षक (हिंदी अनु0)

हरियाली से आच्छादित,
मनमोहक छटा बिखेरती,
महान बल का सर्वोत्तम अकादमी.....,
सीआरपीएफ अकादमी।

न जाने कितनी विशेषताएं
समाई हुई हैं इसमें,
विश्व स्तर की फायरिंग
भी होती है इसमें।

देश के कोने–कोने से आए
अनेक भाषा–भाषी के नवजवान,
प्रशिक्षण पाकर बन जाते हैं
अधिकारी महान्।

यहां आते हैं ये लोग
जन साधारण बनकर,
पास आउट होकर बन जाते है
जेन्टलमेन आफिसर।

उन पर अकादमी की आशीर्वाद
व कृपा बनी रहेगी हरपल,
आंच न आने पाए देश की शान
और तिरंगे पर किसी पल।

स्वच्छ भारत अभियान



सुमन नौटियाल
हव/मंत्रा0

स्वच्छ भारत अभियान चलायें
एक कदम स्वच्छता की ओर बढ़ाएं
देश को प्रदूषण से मुक्त करायें
चलो स्वच्छ भारत अभियान चलायें।।
मक्खी, मच्छर गन्दगी से पैदा
होकर करते हैं, हमले की तैयारियां
जिनसे पैदा होती हैं, डेंगू मलेरिया
और हैजा जैसी बिमारियां।।
इन बिमारियों को जड़ से निपटाएं
देश को सुरिक्षत बनाएं
चलो स्वच्छ भारत अभियान चलायें।।

मोदीजी ने इस देश में स्वच्छता अभियान चलाया है
इस दिशा की ओर, एक नया कदम बढ़ाया है
आओ मिलकर कसम ये खाएं,
स्वच्छ भारत अभियान चलायें।।
बच्चे, बूढ़े और जवान सबने मिलकर ये ठानी है
देश को प्रदूषण से सुरक्षित रखने
की कसम हमको खानी है
देश की धरोहर हैं ये बच्चे, इन्हें बीमारी से बचाना है
देश का भविष्य चमकाना है।।
आओ सब मिलकर यह नारा लगाएं
घर–घर में जागरूकता फैलायें
देश को उन्नति की ओर ले जाएं
चलो स्वच्छ भारत अभियान चलायें।।

राजभाषा पुरस्कार रिपोर्ट



ग्रुप केन्द्र, के.रि.पु.बल, गाँधीनगर को 'ख' क्षेत्र में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा द्वितीय पुरस्कार



ग्रुप केन्द्र, के.रि.पु.बल, गाँधीनगर को 'ख' क्षेत्र में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा द्वितीय पुरस्कार



पुलिस उप महानिरीक्षक, रेंज, के.रि.पु.बल, खटखटी(असम) को राजभाषा नीति के कार्यान्वयन एवं श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के क्षेत्र में प्रथम स्थान



ग्रुप केन्द्र, के.रि.पु.बल, कूटा को 'ग' क्षेत्र में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रथम पुरस्कार

महानिदेशक के दौरे

ग्रुप केन्द्र ग्रेटर नोएडा, दिनांक 09/07/2016











महानिदेशक के दौरे

ग्रुप केन्द्र सोनीपत, दिनांक 13/08/2016













महानिदेशालय के कार्यक्रम

"अयोध्या के शूरवीर" कॉमिक बुक का विमोचन



महानिदेशक से मिले अयोध्या के शूरवीर









सरदार पटेल मेमोरियल व्याख्यान





69वां स्वतंत्रता दिवस





सद्भावना दिवस





रोहिणी स्कूल के छात्र पुरस्कृत



दिनांक 12/08/2016 को के.रि.पु.बल पब्लिक स्कूल रोहिणी ने 2016 मे अव्वल आने वाले छात्रों को पुरस्कृत एवं सम्मानित किया। मुख्य अतिथि श्री आर0 पी0 पाण्डेय, महानिरीक्षक (प्रशासन) सह अध्यक्ष प्रबंधन समिति के.रि.पु.बल पब्लिक स्कूल रोहिणी का स्वागत श्रीमती निधि चौधरी, प्रधानाचार्या, के.रि.पु. बल पब्लिक स्कूल रोहिणी ने पौधे भेंट कर किया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि श्री पाण्डेय, महानिरीक्षक (प्रशासन) सह अध्यक्ष प्रबंधन समिति, के.रि.पु.बल पब्लिक स्कूल रोहिणी के द्वारा ज्ञान की देवी माँ सरस्वती को दीप प्रज्वलित कर किया गया। पुरस्कार कार्यक्रम में के.रि.पु.बल पब्लिक स्कूल रोहिणी के छात्रों ने गणेश वंदना, शिव तांडव एवं सूफी गीतों को प्रस्तुत कर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

मुख्य अतिथि ने 2016 में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने एवं अव्वल आने वालों छात्रों की भूरि–भूरि प्रशंसा की एवं ट्रॉफी एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए। उन्होंने कहा कि सफलता पाने वालों के लिए मेहनत बहुत जरूरी है और मेहनत करने वालों की ही सफलता कदम चूमती है। श्री पाण्डेय ने सभी छात्र–छात्राओं को और अधिक उत्कृष्ट प्रदर्शन करने की लिए प्रोत्साहित किया एवं अपनी शुभकामनाएं दी।



पुरस्कार समारोह के अंत में श्रीमती निधि चौधरी, प्रधानाचार्या, के.रि.पु.बल पब्लिक स्कूल रोहिणी ने मुख्य अतिथि को आभार व्यक्त किया एवं सभी छात्र–छात्राओं को और अधिक उत्कृष्ट प्रदर्शन करने की लिए प्रोत्साहित किया एवं अपनी शुभ कामनाएं दी।

कार्यक्रम का समापन स्कूल के मुख्य छात्र–छात्राओं के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

****

उपलब्धियाँ

परिचालन शाखा

1. दिनांक 10/07/2016 को विशेष जानकारी पर के.रि.पु.बल के जवानों ने राज्य पुलिस के साथ आईटीआई कॉलेज, बीजापुर, थाने के पास नाका लगाया। नाका के दौरान एक वाहन पर संदेह होने के कारण जवानों ने रोका तो माओवादियों ने जवानों के ऊपर गोलीबारी शुरू कर दी। जवानों ने जवाबी कार्रवाई की और चार उग्रवादियों को मार गिराया। मारे गये उग्रवादियों के पास से एक 9 एमएम पिस्तौल, एक देशी पिस्तौल, एक स्कॉरपियो वाहन एवं अन्य विस्फोटक सामग्री बरामद किया गया।
2. दिनांक 16/07/2016 को स्वयं के खुफिया सूचना पर 204 कोबरा के जवानों ने राज्य पुलिस के साथ जिला बीजापुर, थाना उसूर के तुमरेल जंगल में विशेष ऑपरेशन चलाया। ऑपरेशन के दौरान सुरक्षा बलों एवं माओवादियों के बीच एक भीषण मुठभेड़ हुई जिसमें चार माओवादियों को मार गिराया। मारे गये माओवादियों के पास से चार मज़ल लोडेड बंदूकें, चार आईडी, 26 डेटोनेटर, गन पाउडर, तीर, ग्रेनेड और अन्य आपत्तिजनक वस्तुओं को बरामद किया गया।
3. दिनांक 18/07/2016 को विशेष जानकारी पर 205 कोबरा के जवानों ने राज्य पुलिस के साथ जिला औरंगाबाद, बिहार, थाना मदनपुर के डुमरीनाला गाँव में विशेष तलाशी ऑपरेशन चलाया। तलाशी ऑपरेशन के दौरान माओवादियों एवं जवानों के बीच मुठभेड़ हुई। मुठभेड़ में 7 माओवादी मारे गये और आईईडी विस्फोट में 10 जवान शहीद हो गये। मुठभेड़ स्थल से 1 यूबीजीएल, 1 एसएलआर, 2 इंसास राइफल, 1 एके–47, 448 राउंड गोले, दो एके–47 की पत्रिका, 11 इंसास राइफल की पत्रिका, 1 एसएलआर की पत्रिका और अन्य आपत्तिजनक वस्तुएँ बरामद की गयीं।
4. दिनांक 24/7/2016 को विशेष जानकारी पर 210 कोबरा के जवान राज्य पुलिस के साथ मिलकर जिला कोकराझार, थाना पटगाँव के झारवारी गाँव में एक विशेष तलाशी अभियान चलाया। ऑपरेशन के दौरान सुरक्षा बलों और एनडीएफबी (एस) के कार्यकर्त्ताओं के बीच एक भीषण मुठभेड़ हुई। गोलीबारी में एनडीएफबी (एस) के दो कट्टर विद्रोही मारे गये। मुठभेड़ स्थल से दो 7.65 एम.एम. पिस्तौल, 7.65 पिस्तौल के पांच राउंड गोली, दो चीनी हथगोले और अन्य आपत्तिजनक वस्तुयें बरामद की गयीं।

कल्याण शाखा

1. परिचालन एवं ड्यूटी के दौरान कार्रवाई में घायल/अपंग हुए कार्मिकों को केंद्रीय कल्याणनिधि से निम्नलिखित वित्तीय सहायता उपलब्ध करवाई जाएगी :–

(ए) कानून एवं व्यवस्था ड्यूटी के दौरान/पत्थरबाजी, बचाव एवं राहत ऑपरेशन/परिचालन के दौरान कार्रवाई के कारण लगी हल्की चोट जिसमें कि चिकित्सीय सहायता आवश्यक हो, प्रत्येक घायल कार्मिक को रूपये 4,000/–वित्तीय सहायता के रूप में प्रदान की जायेगी।

(बी) कानून एवं व्यवस्था ड्यूटी के दौरान/पत्थरबाजी, बचाव एवं राहत ऑपरेशन/परिचालन के दौरान कार्रवाई के कारण लगी गंभीर चोट जिसमें कि अस्पताल में भर्ती होना पड़ा हो अथवा हड्डियों में टूटफूट/टांके इत्यादि लगाने पड़े हों, प्रत्येक घायल कार्मिक को रूपये 25,000/–वित्तीय सहायता के रूप में प्रदान की जायेगी।

(सी) परिचालनिक कार्रवाई के दौरान गोली/छर्रा/विस्फोट के कारण लगी गंभीर चोट जिसमें कि अस्पताल में भर्ती होना पड़ा हो, लेकिन स्थायी रूप से अपंगता नहीं आई हो, प्रत्येक घायल कार्मिक को रूपये 50,000/–वित्तीय सहायता के रूप में प्रदान की जायेगी।

(डी) परिचालनिक कार्रवाई के दौरान लगी गंभीर चोट जिसमें कि अस्पताल में भर्ती होना पड़ा हो, तथा स्थायी रूप से अपंगता आई हो, प्रत्येक घायल कार्मिक को रूपये 1,00,000/–वित्तीय सहायता के रूप में प्रदान की जायेगी। किसी अन्य भुगतान के साथ इसे समायोजित नहीं किया जाएगा।

2. कार्मिक जो वास्तविक सरकारी ड्यूटी के दौरान अपंग होंगे, उनके कृत्रिम अंगों को लगवाने हेतु आने वाले खर्च की राशि की स्वीकृति निम्न प्रकार से प्रदान की जायेगी :–

1. घुटने के नीचे का कृत्रिम अंग – रू. 52,200/–	2. घुटने से उपर का कृत्रिम अंग – रू. 73,040/–
3. कुल्हे का कृत्रिम जोड़ लगवाने हेतू– रू. 60,300/–	4. कोहनी से नीचे का कृत्रिम अंग – रू. 1,29,500/–
5. कोहनी से उपर का कृत्रिम अंग – रू. 1,76,500/–	6. कंधे का कृत्रिम जोड़ लगवाने हेतू – रू. 37,000/–

पदोन्नति



श्री रविदीप सिंह साही
महानिरीक्षक के पद पर पदोन्नत



श्री अभयवीर चौहान
महानिरीक्षक के पद पर पदोन्नत

प्रतिनियुक्ति



श्री सतीश चन्द्र वर्मा
पुलिस महानिरीक्षक, त्रिपुरा सेक्टर

सेवानिवृति



श्री आशुतोष वर्दे सहा. कमा. (लाईन) हवलदार/चालक बाबू खान को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए

स्थानांतरण

क्र.सं.	नाम, पद एवं ईरला	पूर्व तैनाती	स्थानान्तरण
1.	श्री अरूण कुमार, पुलिस महानिरीक्षक, ईरला–2524	त्रिपुरा सेक्टर	महानिदेशालय
2.	श्रीमती उषा किरण कांडुला, पु.उ.म.नि., ईरला–2660	ग्रु.के. रॉची	पश्चिम बंगाल सेक्टर मुख्यालय
3.	श्री आर.टी. परमहंश, पु.उ.म.नि. ईरला–2795	ग्रु.के. पुणे	मध्य प्रदेश सेक्टर मुख्यालय
4.	श्री अजय मिश्रा, पु.उ.म.नि., ईरला–3397	एस.पी.जी.	छत्तीसगढ़ सेक्टर मुख्यालय
5.	श्री आर.सी. मीणा, पु.उ.म.नि., ईरला–2799	रेंज नीमच	ग्रु0के0 ग्वालियर
6.	श्री सुधाकर उपाध्याय, पु.उ.म.नि., ईरला–2557	रेंज खटखटी	महानिदेशालय
7.	श्री विद्युतसेन गुप्ता, पु.उ.म.नि., ईरला–2679	ग्रु.के. बिलासपुर	श्रीनगर सेक्टर, मुख्यालय

विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक



अतुल करवाल, पुलिस महानिरीक्षक
श्रीनगर सेक्टर



अरूण कुमार, पुलिस महानिरीक्षक
बिहार सेक्टर



चामु सिंह कठैत, पु.उप.महानिरीक्षक
ग्रु.के., काठगोदाम



रणबीर सिंह, कमाण्डेन्ट
38 बटालियन (सेवा निवृत)



अशोक कुमार दास, उप कमाण्डेन्ट
ग्रु.के., भुवनेश्वर

सराहनीय सेवा के लिए पुलिस पदक

क्र.सं.	ईरला/बल सं.	पद	नाम	कार्यालय
1.	3828	सी.एम.ओ./एस.जी	डॉ. (श्रीमती) वानिता मूर्ति	कम्पोजिट अस्पताल, आवड़ी
2.	3565	कमाण्डेन्ट	शंकर दत्त पाण्डेय	द्वितीय सिंगनल बटालियन
3.	3639	कमाण्डेन्ट	सुशील कुमार मिश्रा	6 बटालियन
4.	3539	कमाण्डेन्ट	विनय कुमार सिंह	165 बटालियन
5.	3625	कमाण्डेन्ट	प्रवीण कुमार सिंह	122 बटालियन
6.	3551	कमाण्डेन्ट	मानस रंजन	महानिदेशालय
7.	3607	कमाण्डेन्ट	दलवीर सिंह ग्रेवाल	181 बटालियन
8.	3577	कमाण्डेन्ट	पंकज कुमार	11 बटालियन
9.	3538	कमाण्डेन्ट	राजेन्द्र प्रसाद	महानिदेशालय
10.	5146	द्वि.कमा.अधिकारी	जेड.एच. खान	117 बटालियन
11.	4880	द्वि.कमा.अधिकारी	मुकेश कुमार त्यागी	रेन्ज मुख्यालय कूटा
12.	4777	द्वि.कमा.अधिकारी	स्वर्ण सिंह	जम्मू सेक्टर मुख्यालय
13.	4535	द्वि.कमा.अधिकारी	विजय कुमार	रेंज मुख्यालय सिलीगुड़ी
14.	5611	उप कमाण्डेन्ट	दरबारा सिंह	ग्रु0के0, पिंजौर
15.	6058	उप कमाण्डेन्ट	रामेश्वर सिंह	16 बटालियन
16.	6221	उप कमाण्डेन्ट	सुरेन्द्र लाल यादव	27 बटालियन
17.	6219	उप कमाण्डेन्ट	श्याम सिंह	116 बटालियन
18.	6845	उप कमाण्डेन्ट	रामाश्रय शुक्ला	36 बटालियन
19.	7756	सहा.कमाण्डेन्ट	अमन सिंह	ग्रु.के. काठगोदाम
20.	7444	सहा.कमाण्डेन्ट	राजेन्द्र प्रसाद	30 बटालियन

21.	800310115	निरीक्षक / जीडी	रविन्द्र सिंह	ग्रु.के. जोधपुर
22.	811180272	निरीक्षक / जीडी	शेखरानन्द शर्मा	ग्रु0के0 काठगोदाम
23.	800680697	निरीक्षक / जीडी	जगतार सिंह	ग्रु0के0 कूटा (अब हीरानगर)
24.	810705586	निरीक्षक / जीडी	गोपाल जी यादव	ग्रु0के0 मोकामाघाट
25.	781120219	निरीक्षक / जीडी	वेद प्रकाश	ग्रु0के0 गुड़गॉव
26.	800681872	निरीक्षक / जीडी	राम प्रकाश	ग्रु0के0 गुड़गॉव
27.	800470158	निरीक्षक / जीडी	सामदार सिंह	124 बटालियन
28.	800677199	निरीक्षक / जीडी	फारूक अहमद	185 बटालियन
29.	801170969	निरीक्षक / जीडी	मो0 युसुफ खान	ग्रु0के0 रायपुर
30.	810140115	निरीक्षक / जीडी	प्रबोध कुमार साहा	124 बटालियन
31.	790270078	निरीक्षक / जीडी	रमेश कुमार पाण्डेय	10 बटालियन
32.	790330213	निरीक्षक / जीडी	बलवीर सिंह	84 बटालियन
33.	800070071	निरीक्षक / जीडी	प्रेम प्रकाश यादव	27 बटालियन
34.	790060199	निरीक्षक / जीडी	ओंकार चन्द	181 बटालियन
35.	801310109	निरीक्षक / जीडी	दिलीप कुमार मोहन्ती	ग्रु0के0 भुवनेश्वर
36.	800410182	निरीक्षक / जीडी	रमेश चन्द	177 बटालियन
37.	800080111	निरीक्षक / जीडी	राज कुमार	ग्रु0के0 श्रीनगर
38.	800600704	उ0नि0 / जीडी	महादेव टिग्गा	सी.टी.सी.(टी.एवं आई.टी.)
39.	781150448	उ0नि0 / जीडी	प्रहलाद देव वर्मा	त्रिपुरा सेक्टर मुख्यालय
40.	791140677	उ0नि0 / जीडी	विजय कुमार साहु	227 बटालियन
41.	830747898	उ0नि0 / जीडी	जगमल सिंह	27 बटालियन
42.	800661764	स0उ0नि0 / जीडी	कृष्ण स्वरूप	23 बटालियन
43.	810713748	हव0 / जीडी	राजू एन.एस.	ग्रु0के0 पल्लीपुरम
44.	860883681	स.उ.नि. / महिला	सुलोचना के.वी.	आर.टी.सी. पल्लीपुरम
45.	800686411	निरीक्षक / टी.	भगत सिंह	प्रथम बेतार वाहिनी
46.	800675418	निरीक्षक / क्रिप्टो	श्रीनिवास	महानिदेशालय
47.	801220725	निरीक्षक / आर.ओ.	के.कुमार	द्वितीय सिंगनल बटालियन
48.	810290349	निरीक्षक / आर्मोरर	जवाहर प्रसाद	सी.डब्लू.एस.–तीन
49.	791240253	उ0नि0 / बैंड	सुरेन चन्द्र गोगोई	ग्रु0के0 इम्फाल
50.	791110038	उ0नि0 / एम.टी.	नरपत सिंह	67 बटालियन
51.	801220921	उ0नि0 / एम.टी	तानकेश्वर ज्ञान	सी.आई.ए.टी. सिलचर
52.	801320355	उ0नि0 / टेलर	रणधीर सिंह	ग्रु0के0 सोनीपत
53.	800580167	हव0 / मोची	वी. राजन	ग्रु0के0 तरालु
54.	810704286	सिपाही / बारबर	लक्ष्मी शंकर	ग्रु0के0 अमेठी
55.	850793965	सिपाही / कुक	राम मूर्ति तिवारी	सी.टी.सी. नांदेड़
56.	820690162	सिपाही / धोबी	राजदीन	पी.डी.जी.
57.	9268	सहा.कमा.(मंत्रा0)	वरूण बंदोपाध्याय	ग्रु.के. सिलीगुड़ी
58.	9138	सहा.कमा.(मंत्रा0)	सब्यसाची चट्टोपाध्याय	पश्चिमी सेक्टर, मुख्यालय

महानिदेशक का डिस्क एवं प्रशंसा पत्र (जुलाई-अगस्त 2016)

क्र. सं.	ईरला / बल सं.	पद	नाम	कार्यालय	अभ्युक्ति
1.	6930	उप कमाण्डेन्ट	राम किशन	110 बटालियन	रजत (परिचालन)
2.	045203914	हव0 / जीडी	ओम प्रकाश	110 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
3.	030630028	सिपाही / बिगुलर	रतनेश एस	110 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
4.	061777299	सिपाही / जीडी	नवीन लिम्बु	110 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
5.	105011732	सिपाही / जीडी	मांगी लाल	110 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
6.	110111073	सिपाही / जीडी	दीपक कुमार गुप्ता	110 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
7.	9765	सहायक कमाण्डेन्ट	उपेन्द्र प्रताप सिंह	209 कोबरा	रजत (परिचालन)
8.	005200642	निरीक्षक / जीडी	प्रेम प्रकाश	209 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
9.	055231126	उप निरीक्षक / जीडी	पंकज शर्मा	209 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
10.	125040203	उप निरीक्षक / जीडी	संतोश कुमार के.वी.	209 कोबरा	रजत (परिचालन)
11.	125040932	उप निरीक्षक / जीडी	वेंकट आर.वी.	204 कोबरा	रजत (परिचालन)
12.	105010067	सिपाही / जीडी	बाग चन्द खटीक	204 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
13.	075226315	सिपाही / जीडी	उमेश कुमार मिश्रा	204 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
14.	105311031	सिपाही / जीडी	मो. आलोंगीर एस.के.	204 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
15.	080210583	सिपाही / जीडी	संतोष कुमार	204 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
16.	6595	उप कमाण्डेन्ट	धर्मेन्द्र कुमार झा	203 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
17.	10117	सहायक कमाण्डेन्ट	अनूप सिंह	203 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
18.	10059	सहायक कमाण्डेन्ट	हरे राम	203 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
19.	065111248	उप निरीक्षक / जीडी	देवेन्द्र	203 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
20.	105022315	सिपाही / जीडी	राम राकेश पटेल	203 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
21.	105201548	सिपाही / जीडी	दुर्गानन्द झा	203 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
22.	061772155	सिपाही / जीडी	उत्तवाल बुर्मन	203 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
23.	4992	द्वि.कमा.अधि.	पंकज चौधरी	66 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
24.	9253	सहायक कमाण्डेन्ट	धर्मेन्द्र कुमार	66 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
25.	041664794	सिपाही / जीडी	अविनाश चौधरी	210 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
26.	041605663	सिपाही / जीडी	जल सिंह बोरा	210 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
27.	973363651	हव / जीडी	फारूख अहमद लोन	18 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
28.	9001	सहायक कमाण्डेन्ट	विजय एम.	211 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
29.	105260625	सिपाही / जीडी	सोनु राम	211 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
30.		एस.पी.ओ.	विजय कुमार	जे.के.पी.	कांस्य (परिचालन)
31.	060040292	सिपाही / इन्ट	दलीप कुमार	205 कोबरा	स्वर्ण (परि.) एवं एक तारा
32.	9282	पुलिस महानिरीक्षक	एम.वी.राव. भा.पु.से	द. सेक्टर मुख्यालय	रजत(परिचालन)
33.	2677	पुलिस उप महानिरीक्षक	एस.के.मिश्रा	चेन्नई रैंज मुख्यालय	रजत (परिचालन)
34.	3354	कमाण्डेन्ट	एम.दीनाकरण	ग्रुप केन्द्र आवडी	स्वर्ण (परि.) एवं एक तारा
35.	4723	द्वितीय कमान अधिकारी	ई. रमेश	सीटीसी– कोयम्बटूर	कांस्य (परिचालन)
36.	4790	द्वितीय कमान अधिकारी	अनिल गुप्ता	अस्थायी 312(175 बटा)	स्वर्ण (परिचालन)
37.	6783	उप कमाण्डेन्ट	एस.देशिग्गु	77 बटालियन	रजत (परिचालन)
38.	7363	सहायक कमाण्डेन्ट	के.एस.जया कुमार	77 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
39.	9127	सहायक कमाण्डेन्ट	के. जया कुमार	डी / 2 सिग्नल	कांस्य (परिचालन)

40.	891160322	सउनि / जीडी	अमुर्थालिग्म एन	77 बटालियन	स्वर्णिय(परिचालन)
41.	913099574	हव / जीडी	एम.वेणुगोपाल	141 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
42.	045031303	सिपाही / जीडी	ए.बालामुर्गन	198 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
43.	3110	पुलिस उपमहानिरीक्षक	ए.श्रीनिवास	ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम	रजत (परिचालन)
44.	2597	पुलिस उपमहानिरीक्षक	टी.जे.जेकाब	आरटीसी–पेरिंगम	स्वर्ण (परिचालन)
45.	6408	उप कमाण्डेन्ट	के.वी.कुरियकोश	105 आएएफ	कांस्य (परिचालन)
46.	6419	उप कमाण्डेन्ट	के.के.मुखोपाध्य	अस्थायी 310 (67 बटा)	रजत (परिचालन)
47.	6898	उप कमाण्डेन्ट	सुबीर कुमार दास	अस्थायी 304 (22 बटा)	कांस्य (परिचालन)
48.	7285	उप कमाण्डेन्ट	आशिश भटनागर	अस्थायी 305 (174 बटा)	रजत (परिचालन)
49.	7823	सहायक कमाण्डेन्ट	आर.सरवना	78 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
50.	8521	सहायक कमाण्डेन्ट	अनिल कुमार	अस्थायी 304 (07 बटा)	कांस्य (परिचालन)
51.	8829	सहायक कमाण्डेन्ट	सत्येन्द्र सिंह यादव	अस्थायी 305 (174 बटा)	कांस्य (परिचालन)
52.	10380	सहायक कमाण्डेन्ट	संदीप कुमार हाटी	अस्थायी 304 (26 बटा)	कांस्य (परिचालन)
53.	4053	कमाण्डेन्ट	विनोद कार्तिक	97 बटालियन	स्वर्ण (परि.) एव एक तारा
54.	6206	उप कमाण्डेन्ट	अमर सिंह	97 बटालियन	रजत (परिचालन)
55.	8608	सहा कमाण्डेन्ट	अन्शुमान निलरतना	अस्थायी 309 (159 बटा)	रजत (परिचालन)
56.	850350074	सउनि / जीडी	सुदामा रजक	अस्थायी 309 (159 बटा)	कांस्य (परिचालन)
57.	035051365	सिपाही / जीडी	अशोक बैहरा	अस्थायी 342 (77 बटा)	कांस्य (परिचालन)
58.	4501	कमाण्डेन्ट	अम्बरेश कुमार	215 बटालियन	स्वर्ण (परि.) एव तीन तारा
59.	4183	कमाण्डेन्ट	किशोर कुमार	110 बटालियन	स्वर्ण (परि.) एव दो तारा
60.	3599	कमाण्डेन्ट	नरेश कुमार जैसवाल	147 बटा (अब सा.जो. मु.)	कांस्य (परिचालन)
61.	4505	कमाण्डेन्ट	रबीस कुमार सिंह	205 कोबरा (अब म.नि.)	स्वर्ण (परि.) एव तीन तारा
62.	7107	उप कमाण्डेन्ट	विवेक कुमार सिंह	215 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
63.	8868	सहायक कमाण्डेन्ट	लाल जालुन मिशाओ	215 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
64.	811330291	निरीक्षक / जीडी	आर.के.ठाकुर	215 बटालियन	रजत (परिचालन)
65.	105150973	उपनि / जीडी	अमित राज सिंह	215 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
66.	105212309	उपनि / जीडी	संजय यादव	215 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
67.	105071405	उपनि / जीडी	कैलाश चन्द गुर्जर	215 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
68.	055160933	सिपाही / जीडी	प्रवीण कुमार	215 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
69.	075241358	सिपाही / जीडी	निशंत ए.पी	215 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
70.	105030905	सिपाही / जीडी	आई.विन	215 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
71.	4964	द्वितीय कमान अधिकारी	जितेन्द्र कुमार	110 बटालियन	स्वर्ण (परि.) एव दो तारा
72.	5601	उप कमाण्डेन्ट	के.सी.सामल	110 बटालियन	रजत (परिचालन)
73.	6930	उप कमाण्डेन्ट	राम किशन	110 बटालियन	स्वर्णिय (परिचालन)
74.	9760	सहायक कमाण्डेन्ट	सुमित नामदेव	110 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
75.	10189	सहायक कमाण्डेन्ट	एस.आर.सुभाकर	110 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
76.	831190156	निरीक्षक / जीडी	लक्ष्मण सिंह बिस्ट	110 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
77.	840100226	उपनि / जीडी	जे.डी. अंशारी	110 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
78.	045203914	हव / जीडी	ओम प्रकाश	110 बटालियन	रजत (परिचालन)
79.	115316286	सिपाही / जीडी	बपी मोदक	110 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
80.	9949	सहायक कमाण्डेन्ट	जे.के.वर्मा	147 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
81.	047010098	एसएम / जीडी	पी. चेरियन राजू	147 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
82.	031523254	उपनि / जीडी	प्रफुला सरानिया	147 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
83.	880962611	सउनि / जीडी	उमेश कुमार शॉ	147 बटालियन	कांस्य (परिचालन)

84.	031477058	सिपाही / जीडी	एस.के.अताउर रहमान	147 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
85.	041664455	सिपाही / जीडी	के.आई.लसकर	147 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
86.	911240453	सिपाही / जीडी	आर.आर.चौहान	147 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
87.	015091092	सिपाही / जीडी	टुटन दास	147 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
88.	110720069	सिपाही / जीडी	रविन्द्र यादव	147 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
89.	065043654	उपनि / जीडी	सी.ए.रेड्डी	205 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
90.	095121918	उपनि / जीडी	एम.अयानज्ञर	205 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
91.	031501535	हव / जीडी	राज कुमार	205 कोबरा	रजत (परिचालन)
92.	105192773	हव / आरओ	अन्तेश कुमार	205 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
93.	065203544	सिपाही / जीडी	अजय कुमार	205 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
94.	105494811	सिपाही / जीडी	बमबम कुमार	205 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
95.	105202367	सिपाही / जीडी	राम बाबु राय	205 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
96.	105202688	सिपाही / जीडी	संत कुमार मिश्रा	205 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
97.	105203168	सिपाही / जीडी	उमा शंकर प्रसाद	205 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
98.	7540	उप कमाण्डेन्ट	विनोद कुमार	230 बटालियन	स्वर्ण (परिचालन)
99.	6877	सहायक कमाण्डेन्ट	रंजीत सिंह	02 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
100.	037010648	निरीक्षक / जीडी	प्रदीप वी.के.	227 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
101.	087320024	निरीक्षक / जीडी	गिरीश चन्द्र यादव	229 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
102.	125122002	उपनि / जीडी	सुरेश लखरान	219 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
103.	041672617	सिपाही / जीडी	मंजीत सिंह	168 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
104.	6808	उप कमाण्डेन्ट	अजित सी. बाबु	29 बटालियन	रजत (परिचालन)
105.	9483	सहायक कमाण्डेन्ट	दिनेश एस.ए.	28 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
106.	9739	सहायक कमाण्डेन्ट	रवि शर्मा	44 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
107.	830761916	निरीक्षक / जीडी	अंजनी कुमार सिंह	29 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
108.	065349265	सिपाही / जीडी	अशरफ मल्लिक	44 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
109.	075240771	सिपाही / जीडी	नीजु शिवम	28 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
110.	9719	सहायक कमाण्डेन्ट	करनजीत सिंह	14 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
111.	135322565	सिपाही / जीडी	आर.एस. भगत	180 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
112.	971110197	हव / जीडी	सुशभान सिंह	180 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
113.	105179947	सिपाही / जीडी	बी.एन.ओरान	185 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
114.	010340169	सिपाही / जीडी	महेन्द्र कुमार कुशवाहा	92 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
115.	041562582	उपनि / जीडी	राजेश सिंह गुर्जर	204 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
116.	105040616	सिपाही / जीडी	राजु सोरेन	206 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
117.	9438	सहायक कमाण्डेंन्ट	वैभव कुमार श्रीवास्तव	207 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
118.	041680486	उपनि / जीडी	आर.के. यादव	208 कोबरा	रजत (परिचालन)
119.	075331286	सिपाही / जीडी	विभुती वर्मन	210 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
120.	7428	उप कमाण्डेन्ट	गीता यादव	88 (महिला) बटालियन	कांस्य (परिचालन)
121.	135380173	सि / जीडी(महिला)	देवीता कुमारी	135 (महिला) बटालियन	कांस्य (परिचालन)
122.	115023109	सि / जीडी(महिला)	वन्दना पाल	213 (महिला) बटालियन	कांस्य (परिचालन)
123.	64518	उप कमाण्डेन्ट	अंजु द्विवेदी	84 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
124.	880907922	सउनि / जीडी	निशान सिंह	137 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
125.	065343131	सिपाही / जीडी	मुख्तार अहमद	121 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
126.	6675	उप कमाण्डेन्ट	दिनेश कुमार	47 बटालियन	स्वर्ण (परिचालन)
127.	921190244	हव / जीडी	श्रामबिलास मांझी	131 बटालियन	कांस्य (परिचालन)



128.	913181454	हव / इन्ट	प्रदीप कुमार सिंह	153 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
129.	9517	सहायक कमाण्डेन्ट	सावंत योगेश शिवाजी	192 बटालियन	रजत (परिचालन)
130.	055211696	सिपाही / जीडी	मुलचन्द तोनडारे	191 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
131.	075211218	सिपाही / जीडी	संतोश गवाई अरभान	37 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
132.	9175	सहायक कमाण्डेन्ट	दिनेश कुमार सिंह	141 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
133.	041573717	सिपाही / इन्ट	टी.चरनजीत	141 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
134.	9590	सहायक कमाण्डेन्ट	पी.के. बैहरा	134 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
135.	095071003	उपनि / इन्ट	विजय शंकर	रैंज रांची	कांस्य (परिचालन)
136.	0951350746	हव / जीडी	नीरोज कुमार मिन्ज	172 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
137.	115206107	सिपाही / जीडी	अमरीत कुमार यादव	154 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
138.	065175711	सिपाही / जीडी	सागर ओरेया	94 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
139.	100424	सहायक कमाण्डेन्ट	संजीव कुमार मीणा	64 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
140.	941183894	हव / जीडी	विपीन कुमार त्यागी	12 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
141.	041612766	सिपाही / जीडी	दुर्गा दास कुन्दु	148 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
142.	060720514	सिपाही / जीडी	ब्रिजेश तिवारी	148 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
143.	8367	सहायक कमाण्डेन्ट	नील कमल भारद्वाज	129 बटालियन	रजत (परिचालन)
144.	035134207	सिपाही / जीडी	भावनन्दा दास	136 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
145.	8995	सहायक कमाण्डेन्ट	वी.एस. चौहान	149 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
146.	03527732	सिपाही / जीडी	पुलिन पतर	36 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
147.	055154301	सिपाही / जीडी	फिरोज खान	86 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
148.	903023929	हव / जीडी	बी.पी. विजया	78 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
149.	3531	कमाण्डेन्ट	पी.सी. श्रीवास्ताव	200 बटालियन	रजत (परिचालन)
150.	841190933	उपनि / जीडी	अजय पाल सिंह	ग्रुप केन्द्र नोयडा	कांस्य (परिचालन)
151.	5705	उप कमाण्डेन्ट	नरेन्द्र सिंह	123 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
152.	9797	सहायक कमाण्डेन्ट	अभिषेक कुमार सिंह	124 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
153.	6249	उप कमाण्डेन्ट	नीलम सारंगल	114 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
154.	015232053	निरीक्षक / जीडी	नरेन्द्र कुमार	51 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
155.	871313587	हव / जीडी	सुरेश प्रसाद चौधरी	पश्चिमी बंगाल सैक्टर	कांस्य (परिचालन)
156.	810600124	उपनि / जीडी	पी.एम. मोहनदास	83 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
157.	7925	सहायक कमाण्डेन्ट	संदीप सिंह कन्डारी	आईआईएम पुणे	रजत (परिचालन)
158.	4192	कमाण्डेन्ट	जमाल खान	आईआईएम पुणे	रजत (परिचालन)
159.	7565	उप कमाण्डेन्ट	शिवराज सिंह	आईआईएम पुणे	कांस्य (परिचालन)
160.	830724736	उपनि / जीडी	बी.एम.बोपन्ना	डी.बी. एवं टी.एस. तरालु	कांस्य (परिचालन)
161.	971280716	सिपाही / इन्ट	सत्येन्द्र कुमार पाण्डये	47 बटालियन	रजत (परिचालन)
162.	060048348	सिपाही / इन्ट	उपेन्द्र कुमार	47 बटालियन	रजत (परिचालन)
163.	041722989	उपनि / इन्ट	अरूण कुमार दुबे	172 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
164.	065050784	सउनि / मत्रा	प्रभात कुमार	इन्ट महानिदेशालय	कांस्य (परिचालन)
165.	041560659	सिपाही / इन्ट	रवि	इन्ट महानिदेशालय	कांस्य (परिचालन)
166.	061830116	सिपाही / इन्ट	तारीक नबी डार	183 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
167.	4937	द्वितीय कमान अधिकारी	एस.बी.सिंह	परि. महानिदेशालय	स्वर्ण (परि.) एव तीन तारा
168.	095052098	निरीक्षक / जीडी	अमित सचन	204को. / स्पे.सैल / प.म.	कांस्य (परिचालन)
169.	961220391	हव / जीडी	शाजीम ए.	परि. महानिदेशालय	कांस्य (परिचालन)
170.	850840053	उ0नि0 / मत्रा0	बी.एस. नेगी	परि. महानिदेशालय	कांस्य (परिचालन)
171.	9224	सहायक कमाण्डेन्ट	आलोक कुमार	46 बटालियन	कांस्य (परिचालन)

172.	2536	उपमहानिरीक्षक	अमर सिंह नेगी	एसके ओआर	रजत (परिचालन)
173.	3590	कमाण्डेन्ट	दलजीत सिंह	163 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
174.	4003	कमाण्डेन्ट	अजय कुमार शर्मा	90 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
175.	4033	कमाण्डेन्ट	प्रदीप सिंह ग्रबयाल	96 बटालियन	रजत (परिचालन)
176.	4037	कमाण्डेन्ट	विनय आनन्द प्रकाश	183 बटालियन	स्वर्ण (परि.) एव दो तारा
177.	3633	कमाण्डेन्ट	पी.पी. पाउली	73 बटालियन	रजत (परिचालन)
178.	4261	कमाण्डेन्ट	आर.के.चौधरी	28 बटालियन	रजत (परिचालन)
179.	4248	कमाण्डेन्ट	विजय कुमार सिंह	29 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
180.	3615	कमाण्डेन्ट	राजेश कुमार	44 बटालियन	स्वर्ण (परि.) एव एक तारा
181.	4858	द्वितीय कमान अधिकारी	भरत कुमार वैष्णव	162 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
182.	5204	द्वितीय कमान अधिकारी	भवेश चौधरी	161 बटालियन	स्वर्ण (परि.) एव तीन तारा
183.	एमआर5185	ब्रिगेडियर	जी.सी. सत्पथी	92 बेस अस्पताल	रजत (परिचालन)
184.	एमआर05579	कर्नल	विक्रम खन्ना	92 बेस अस्पताल	कांस्य (परिचालन)
185.	एमआर08258	लेफ्टीनेंट कर्नल	एस.के सिंह	92 बेस अस्पताल	कांस्य (परिचालन)
186.	एमएस15504	मेजर	मनोज कुमार	92 बेस अस्पताल	कांस्य (परिचालन)
187.	एनआर18044	कर्नल	जी. वसुन्धरा देवी	92 बेस अस्पताल	कांस्य (परिचालन)
188.	एनआर20326	लैफ्टीनेंट कर्नल	श्रीमती सुनिता जॉर्ज	92 बेस अस्पताल	कांस्य (परिचालन)
189.	15430845	हव/एक्सरे	शीबिन जी	92 बेस अस्पताल	कांस्य (परिचालन)
190.	13982675 ए	हव/आर.ओ.	मोहन चन्द भट्ट	92 बेस अस्पताल	कांस्य (परिचालन)
191.	1399180 के	हव/एसकेटी	रमेश कुमार पी	92 बेस अस्पताल	कांस्य (परिचालन)
192.	15439602 के	सेप/एचके	संतोष एफ आदिन	92 बेस अस्पताल	कांस्य (परिचालन)
193.	2017 एलएफ(पी)	ग्रुप कैप्टन	तरून शाहा	आईएएफ	कांस्य (परिचालन)
194.	21002 के	विंग कमाण्डर	अमिताभ रंजन	आईएएफ	कांस्य (परिचालन)
195.	121400415	फ्लाईट इंजिनीयर	डी.एस. रावत	आईएएफ	कांस्य (परिचालन)
196.	8853	सहायक कमाण्डेन्ट	विक्रम प्रताप सिंह	154 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
197.	015171785	सिपाही/चालक	चन्द्र भूषण	94 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
198.	8820	सहायक कमाण्डेन्ट	महेश कुमार	209 कोबरा	रजत (परिचालन)
199.	031201167	निरीक्षक/जीडी	मनोज कुमार	209 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
200.	125141042	उपनि/जीडी	तरूण बमरारा	209 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
201.	105241915	सिपाही/जीडी	आजोश जोसेफ	209 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
202.	060048722	सिपाही/जीडी	लव कुमार	209 कोबरा	कांस्य (परिचालन)
203.	4490	कमाण्डेन्ट	श्रीमती करूणा राय	बी.एस. मख्यालय	रजत (परिचालन)
204.	6500	उप कमाण्डेन्ट	आर.आर.तिवारी	मुज्जफरपुर रैज मुख्या.	स्वर्ण (परिचालन)
205.	10207	सहायक कमाण्डेन्ट	केशव मिश्रा	168 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
206.	10272	सहायक कमाण्डेन्ट	गोविन्द कटियार	168 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
207.	9479	सहायक कमाण्डेन्ट	दीपक कोठारी	168 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
208.	125280131	निरी/बीडीडी	मनोज कुमार	168 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
209.	125280078	निरी/बीडीडी	गुरदीप सिंह	168 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
210.	125280149	निरी/बीडीडी	श्याम सिंह	168 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
211.	075275744	हव/आरओ	शिवा प्रसाद	168 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
212.	115251575	सिपाही/जीडी	बच्चे महेश	222 बटालियन	कांस्य (परिचालन)
213.	115060379	सिपाही/जीडी	अजीत सिंह जादों	222 बटालियन	कांस्य (परिचालन)



श्री के. दुर्गा प्रसाद, महानिदेशक श्री के. विजय कुमार, भा.से.पु. (भू.पू. महानिदेशक, के.रि.पु.बल) व.सु.स. गृह मंत्रालय को सरदार पटेल मेमोरियल व्याख्यान के अवसर पर स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए।



श्रीमती सुजाता कोडे, कावा अध्यक्षा, कावा के 21वें स्थापना दिवस पर केक काटते हुए।



श्रीमती महबूबा मुफ़्ती, माननीय मुख्यमंत्री, जम्मू कश्मीर
शहीद कमांडेंट श्री प्रमोद कुमार को श्रद्धांजली देते हुए।